मासिक

गुरमत ज्ञान

ISSN 2394-8485

३/-

माघ-फाल्गुन संवत् नानकशाही ५५३ फरवरी 2022 वर्ष १५ अंक ६

गुरुद्वारा शीशमहिल साहिब, श्री कीरतपुर साहिब

बाबा हनूमान सिंघ जी शहीद

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक
गुरमत ज्ञान

माघ-फाल्गुन, संवत् नानकशाही 553
वर्ष 15 अंक 6 फरवरी 2022

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब- 143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 6
. . . श्री गुरु हरिराय साहिब 8
-डॉ. मनजीत कौर
भक्त रविदास जी का गहरा भक्ति-रंग . . . 12
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
बाबा हनूमान सिंघ जी शहीद 17
- स. सिमरजीत सिंघ
सरदार चतर सिंघ 24
-डॉ. किरपाल सिंघ (दिवंगत)
. . . साका श्री ननकाणा साहिब सम्बंधी वृत्तांत 34
-डॉ. धरम सिंघ
बब्बर अकाली लहर और इसकी पृष्टभूमि 38
- स. दीदार सिंघ
जैतो का ऐतिहासिक व लासानी मोर्चा 41
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
भूले सिख गुरू समझाए 45
-डॉ. परमजीत कौर
ख़बरनामा 51

गुरबाणी विचार

फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥
संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥
सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥
इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥
मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥
हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥
संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥
फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥१३ ॥ *(पन्ना १३६)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज फाल्गुन मास के उपलक्ष्य में उच्चारण की गई इस पावन पउड़ी में इस मास की ऋतु तथा वातावरण एवं लोक-सभ्याचार की पृष्ठभूमि में जीव-स्त्री को प्रभु-नाम की सच्ची स्तुति गायन कर मनुष्य जीवन सफल करने का महामार्ग बख़्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि फाल्गुन मास में जब शीत ऋतु जाने लगती है और लोग खुशियां मनाते नज़र आते हैं, उस समय सौभाग्यशाली जीव स्त्रियों को प्रभु-मिलाप की इच्छा तथा उम्मीद लगती है। संत अथवा गुरु उनका प्रभु के साथ मिलाप का अपनी कृपामयी अगुआई से सबब बनाते हैं। उन जीव-स्त्रियों की जीवन-रूपी रात सुखमयी हो जाती है, दुखों का ग्रास नहीं बनती। सौभाग्यशाली जीव-स्त्रियों की इच्छा पूर्ण होती है और उनको प्रभु-पति मिल जाते हैं। वे अपनी सखियों के साथ प्रभु की उपमा के ही गीत गाती हैं और उन्हें प्रभु-पति के अतिरिक्त अन्य कोई नज़र नहीं आता। वे किसी दूसरे को अर्थात् सांसारिक ख्याल आदि को अपने मन-मस्तिष्क में जगह नहीं देती।

ऐसे में वे जीव-स्त्रियां अपना लोक और परलोक संवार लेती हैं। उनको सदीवी सुख-शांति की मानसिक-आत्मिक अवस्था प्राप्त हो जाती है। वे संसार रूपी सागर में डूबने से बच जाती हैं और पुन: जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़तीं अथवा जीवन-मुक्त हो जाती हैं। हम मनुष्य-मात्र

को चाहे एक जीभ ही मिली है परंतु प्रभु के अनेक गुण इस एक जीभ द्वारा ही गायन किए जा सकते हैं। इसके लिए हमें सतिगुरु की शरण में जाना होता है। फाल्गुन मास में हमको सदैव प्रभु की स्तुति करनी चाहिए। उसको अपनी स्तुति की जरा भी इच्छा नहीं है। यहां गहरी रमज़ है कि प्रभु की स्तुति करना हमारे अपने हित में है। यह हमारा कोई प्रभु के सिर एहसान नहीं है। प्रत्येक पल प्रभु की सच्ची स्तुति में लगाकर ही जीवन अर्थपूर्ण हो सकता है। समस्त मानव जीवन-रूपी फाल्गुन मास प्रभु-स्तुति के अनुकूल है।

जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥
हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥
सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥
प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥
कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥
पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥
माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥
नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥१४॥१॥ *(पन्ना १३६)*

श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस अंतिम पउड़ी में प्रभु-नाम के महातम और पावन बाणी का मूल प्रयोजन दर्शाते हुए मनुष्य-मात्र को नाम-बाणी द्वारा प्रभु-नाम के साथ जुड़कर अमूल्य मनुष्य-जन्म का मूल उद्देश्य सफल करने का मार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि जिस-जिस मनुष्य ने प्रभु-नाम का ध्यान किया उसी के ही उद्देश्यपूर्ण कार्य पूरे हुए; जिस-जिस ने पूर्ण गुरु के माध्यम से परमात्मा को याद किया वही रूहानी दरबार में सच्चा व खरा सिद्ध हुआ। सभी सुखों अथवा रूहानी सुखों के खजाने-रूपी हरि-चरणों से जुड़कर भय के कठिन सागर से पार हुआ जा सकता है। नाम से जुड़ने वाले को प्रेम-भक्ति रूपी अमूल्य वस्तु मिल जाती है। वह माया रूपी विष को सहन् नहीं करता। लालच रूपी झूठ से वह छूट जाता है। उसकी अनिश्चितता खत्म हो जाती है और वह प्रभु-नाम-रूपी सत्य से भरपूर हो जाता है। वह परमात्मा को सदैव मन-अंतर में टिकाकर रखता है। जिस पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि है उसके सभी महीने, दिन, मुहूर्त अच्छे हैं अर्थात् परमात्मा की कृपा ही जीवन की सफलता का आधार है। गुरु जी कथन करते हैं कि हे प्रभु! मुझ पर भी कृपा-दृष्टि करो और मुझे अपने दर्शन-दीदार प्रदान कर दो।

संपादकीय

घल्लूघारों और मोर्चों का संघर्षमयी इतिहास

वैसे तो संसार में लगभग हर कौम को संघर्ष करना पड़ा है, परन्तु कुछ कौमें ऐसी हैं, जिनका संघर्ष के साथ शाश्वत और अटूट सम्बन्ध रहा है। सिक्ख पंथ को संसार की ऐसी ही कौमों में गिना जाता है। सिक्ख पंथ के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन को एक अद्वितीय उदाहरण के रूप में अपने साजे-निवाजे सिक्ख पंथ के समक्ष प्रस्तुत करते हुए इसे असत्य और अत्याचारी ताकतों के विरुद्ध संघर्ष करने व हक-सच को स्थापित करने हेतु एक ऐसी जन्म-घुट्टी प्रदान की कि असत्य के ख़िलाफ़ डटना और लड़ना सिक्ख पंथ का स्वभाव ही बन गया।

सिक्ख पंथ के संघर्ष भरे इतिहास में फरवरी का महीना हर वर्ष आकर पंथक स्तर पर हक-सच की पुनर्स्थापित के लिए लड़े गए बहुत ही कठिन संघर्ष की दास्तान याद कराता है। इसी माह सिक्ख पंथ पर अफगान हमलावर अहमद शाह अब्दाली ने सन् १७६२ ई. में बहुत बड़ी संख्या में अपनी फौज द्वारा हमला कर सिक्ख पंथ के अस्तित्व को मिटाने के गलत इरादे को अमल में लाने का यत्न किया। मलेरकोटला के निकट कुप्प रोहीड़ा नामक स्थान पर उसने एक बड़े सिक्ख समूह को घेर कर सिक्ख पंथ की नस्लकुशी करने की भद्दी करतूत की। यह सिक्ख समूह सिक्ख परिवारों का समूह था, जिसमें बहुत बड़ी संख्या में सिक्ख स्त्रियां, बच्चे और बुजुर्ग शामिल थे। सिक्खों की संख्या अब्दाली की फौज की संख्या के सामने बहुत कम थी। अब्दाली बड़ी तेज़ी के साथ सिक्ख समूह पर आ हमलावर हुआ था। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार तारा सिंघ गैबा, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया और सरदार चढ़त सिंघ जैसे सिक्ख सरदारों के नेतृत्व में सिक्ख योद्धाओं ने अब्दाली के हमले को रोकने के लिए बहुत ज़ोरदार और बेमिसाल जद्दोजहद की। सिक्ख-पंथ का बेहिसाब राष्ट्रीय नुकसान इस घल्लूघारे में हुआ। लगभग तीस हज़ार की संख्या में जानी नुकसान को सहन कर अपना अस्तित्व बचाये रखना और अपना मानसिक तथा आत्मिक संतुलन कायम रखना संसार भर में केवल और केवल गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख पंथ तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज द्वारा सृजित खालसा पंथ के हिस्से ही आया है। यह याद रहे कि इस घल्लूघारे के कुछ माह पश्चात ही सिंघों ने श्री अमृतसर में अब्दाली की फौज पर हमला कर उसे यह एहसास कराया कि सिक्ख पंथ में अभी भी उसे विकल करने और भगाने का दम एवं हौसला है। इसके पश्चात अब्दाली सिक्ख पंथ की तरफ बुरी नीयत के साथ झांकने की हिम्मत नहीं कर सका था। वो श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर के लिए अपमान के बदले में अपने किए का फल भोगता हुआ इस फ़ानी संसार से कूच कर गया था। ख़ालसा ने विभिन्न सिक्ख मिसलों के अधीन पंजाब पर और महाराजा रणजीत सिंघ ने पंजाब व पंजाब से बाहर दूर तक अकाल पुरख की फतह के झंडे झुला दिए थे।

बीसवीं सदी में अंग्रेज़ शासकों-प्रशासकों के जब्र-ज़ुलम के ख़िलाफ़ गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख पंथ को कई मोर्चे लगाने पड़े। इनमें से 'साका ननकाणा साहिब' और 'जैतो का मोर्चा' अविस्मरणीय सिक्ख इतिहास की सृजना करते हुए हमारे दृष्टिगोचर होते हैं।

विदेशी शासक सिक्ख पंथ के जान से प्यारे गुरुद्वारा साहिबान की पवित्रता को भंग करने के भद्दे यत्न कर रहे थे। समय के बीतने के साथ-साथ गुरुद्वारों के महंत ऐशप्रस्त होकर सिक्ख संगत के सिक्खी जज़्बातों को नुकसान पहुंचा रहे थे। वे पवित्र गुरुद्वारा साहिबान में अनैतिक करतूतें कर रहे थे। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का महंत नारायण दास बहुत ही ज्यादा बिगड़ चुका था। जब सिक्ख संगत ने उसके अपवित्र हाथों में से प्रबंध छीन कर सिक्ख पंथ के हाथ में देने का बीड़ा उठाया तो समकालीन हाकिमों की शह पर उसने गुरुद्वारा साहिब की सीमा में गुंडे-बदमाश जमा कर लिए। जत्थेदार लछमण सिंघ धारोवाली के नेतृत्व में गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध लेने के लिए शांतमयी रहने का प्रण कर गए जत्थे को बंदूकों, तलवारों और गंडासों से हमला कर शहीद कर दिया गया। इस साके में सैकड़ों सिक्ख शहीद हुए, परन्तु अंत में तत्कालीन निज़ाम को सिक्खी आस्था के आगे झुकना पड़ा। इस प्रकार श्री ननकाणा साहिब का प्रबंध सिक्ख पंथ के अपने हाथों में आ सका।

जैतो का मोर्चा तत्कालीन अंग्रेज़ सरकार की गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब जैतो (जिला फरीदकोट) में नाजायज हस्तक्षेप के प्रतिक्रम के रूप में उठा जबकि गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख, सिक्ख पंथ के साथ चट्टान की तरह खड़े रहने वाले पंथक भावना के धारक नाभा के सिक्ख राजा स. रिपुदमन सिंघ के साथ हो रहे राजनीतिक स्तर पर अन्याय के ख़िलाफ़ शांतमयी ढंग के साथ रोष प्रकट कर रहे थे। सिक्ख संगत ने सिक्ख पंथ की प्रतिनिधि संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नेतृत्व में शांतमयी संघर्ष किया। यह संघर्ष बहुत लम्बा हो गया। तत्कालीन सरकार ने हरेक पैंतरा इस संघर्ष को नाकाम करने के लिए इस्तेमाल किया परन्तु अंततः सिक्खी आस्था के आगे सरकार को झुकना ही पड़ा। यह याद रहे कि इस ऐतिहासिक सिक्ख संघर्ष में सिक्खों का ज़ोरदार समर्थन ग़ैर-सिक्ख राजनीतिक नेताओं ने भी किया। फरवरी १९२४ ई. का इस मोर्चे में विशेष समय है। २१ फरवरी, १९२४ ई. को श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर से जैतो पहुँचे ५०० सिंघों के शहीदी जत्थे पर पुलिस ने गोलियाँ चला कर बड़े गोलीकांड को अंजाम दिया। १०० के लगभग सिंघ शहीद हुए और २०० के लगभग सिंघ घायल हुए। इसके पश्चात भी लगभग डेढ़ वर्ष तक सिक्ख पंथ को घोर संघर्ष के दौर में से गुज़रना पड़ा। अंततः सरकार को २७ जुलाई, १९२५ ई. को घुटने टेकने पड़े। गुरुद्वारा गंगसर साहिब में सरकार द्वारा श्री अखंड पाठ साहिब पर लगाई गई पाबंदी को हटाने के एलान के साथ ७ अगस्त, १९२५ ई. को १०१ श्री अखंड पाठ साहिब संपूर्ण करते हुए जैतो के मोर्चे को फतह किया गया। घल्लूघारों और मोर्चों से भरपूर हमारा गौरवशाली सिक्ख इतिहास हमें वर्तमान में भी हर प्रकार के ज़ुल्म, जब्र और अन्याय के विरुद्ध अड़ने, लड़ने तथा हक-सच की पुनर्स्थापित करने हेतु तनदेही से यत्नशील होने के लिए प्रेरणा प्रदान करता आ रहा है।

ओजस्वी व्यक्तित्व के मालिक : श्री गुरु हरिराय साहिब

*-डॉ. मनजीत कौर**

श्री गुरु हरिराय साहिब का प्रकाश (जन्म) बाबा गुरदित्ता जी तथा माता निहाल कौर जी के घर माघ सुदी १३, संवत् १६८६ तद्नुसार १६ जनवरी, १६३० ई. को कीरतपुर साहिब, जिला रोपड़ (पंजाब) में हुआ। छठम गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब मीरी-पीरी के मालिक आप जी के दादा जी थे। उनके महान व्यक्तित्व का आपके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। आप जी की शिक्षा-दीक्षा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की देख-रेख में हुई। धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ आपको शस्त्र-विद्या में भी निपुण किया गया। परिणामस्वरूप शांतचित्त, कोमल हृदय, उदारचित्त के साथ-साथ शारीरिक रूप से भी आप बहुत बलशाली थे, अतः आपका जीवन दया, प्रेम, निर्भयता एवं शूरवीरता का विलक्षण स्वरूप था।

आपके हृदय की कोमलता का एक पुख्ता प्रमाण आपके जीवन की एक घटना से स्पष्ट हो जाता है कि एक दिन उपवन में टहलते हुए आपका चोगा (पोशाक) एक पौधे से अनायास उलझ गई। परिणामस्वरूप टहनी से एक सुन्दर फूल टूट कर बिखर गया और आपका हृदय व्यथित हो गया। आप वहीं उदास मुद्रा में खड़े हो गए। इस दौरान आप जी के दादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने आपको देखा और बड़े प्यार से समझाया कि अगर चोला विशाल पहना हो तो चलना भी संभल कर चाहिए। कहने से तात्पर्य कि अगर बड़ी जिम्मेदारी उठा रखी हो तो ताकत का प्रयोग अत्यन्त सूझ-बूझ के साथ करना चाहिए। इस आदेश का पालन आपने जीवन-पर्यन्त किया।

हर प्रकार से योग्य जान कर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने ज्योति-जोत समाने से पूर्व गुरुआई आपको देने का निर्णय किया। १६४४ ई. में बाबा बुड्ढा जी के सुपुत्र भाई भाना जी ने आपको गुरुता पर विराजमान कराने की रस्म-क्रिया पूर्ण की। आप नाम-सिमरन के अभ्यासी, नितनेम में

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९१२९७-६२५२३*

दृढ़ और बाणी से अथाह प्यार व सत्कार करने वाले थे। अमृत वेला में उठते, पाठ-सिमरन में तल्लीन हो जाते। उपरान्त संगत में जाते और पावन उपदेश देकर निहाल करते। गुरबाणी शब्द-कीर्तन श्रवण करते। संगत की जिज्ञासा उनके प्रश्नों के सुंदर उत्तर देकर शांत करते। गुरबाणी के प्रति गुरु जी में अपार श्रद्धा थी। इसका एक उदाहरण यहां उल्लेखीय है :—

एक बार दूर-दूर से संगत अमृतमयी गुरबाणी का कीर्तन करते हुए कीरतपुर साहिब पहुंची। रात्रि का समय था। गुरु जी पलंग पर विश्राम कर रहे थे। जैसे ही इलाही बाणी के मधुर शबद गुरु जी ने सुने, वे उसी पल बड़ी तीव्रता से उठे। जल्दी-जल्दी में उनके चरण पलंग से टकरा गए और खून बहने लगा। गुरु साहिब अविलम्ब संगत के बीच पहुंचे। संगत ने जब गुरु साहिब के पैर से रक्त-स्राव होते देखा तो गुरु जी को विश्राम करने के लिए कहा। इस पर गुरु साहिब ने कहा कि गुरबाणी-कीर्तन हो रहा हो, ऐसे में वे पलंग पर विश्राम कैसे कर सकते हैं! इससे स्पष्ट है कि गुरु साहिब के हृदय में अथाह श्रद्धा और सत्कार था— गुरबाणी के प्रति।

गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी पर श्रद्धा और सत्कार के साथ-साथ पंगत एवं संगत की मर्यादा को दृढ़ करवाया। पंजाब के मालवा तथा दुआबा क्षेत्र में प्रचार-दौरे किए और सिक्ख धर्म को प्रफुल्लित किया। इतिहासकारों की खोज के अनुसार श्री गुरु हरिराय साहिब ने मुकुंदपुर, जो वर्तमान में जलंधर जिले में स्थित है, में अपनी इस यात्रा के दौरान बांस की एक कोंपल जमीन में गाड़ी, जो आज एक शानदार वृक्ष के रूप में कायम है।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने धर्म प्रचार-कार्य की गति धीमी नहीं पड़ने दी। गुरु जी ने कई नए प्रचारक नियुक्त कर दूर-दूर स्थानों पर भेजे। भाई सुथरे शाह को दिल्ली तथा भाई फेरू को राजस्थान प्रचार करने हेतु भेजा। कैथल में बागड़ीआं खानदान के मुखिया को मालवा क्षेत्र में प्रचार के लिए भेजा। इतिहासकारों के अनुसार भाई नंद लाल पुरी श्री गुरु हरिराय साहिब के पास सियालकोट आए और गुरु जी से उपदेश मांगा। गुरु जी ने फरमाया कि टोपी नहीं पहननी, तम्बाकू का सेवन नहीं करना तथा केश कत्ल नहीं करवाने। भाई नंद लाल पुरी ने गुरु जी के तीनों वचनों को दृढ़ कर लिया। परिणामस्वरूप उनका नाम 'धर्मी' पड़ गया।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने जीवन-काल में कोई युद्ध नहीं लड़ा, लेकिन फिर भी वे अपने पास २२०० घुड़सवारों की फौज तैयार-बर-तैयार रखते थे। श्री गुरु हरिराय साहिब ने एक प्राकृतिक शफाखाना (औषधालय) भी खोल रखा था, जिसमें दुर्लभ जड़ी-बूटियों से तैयार दवाइयां उपलब्ध थीं। यहां किसी भी अस्वस्थ व्यक्ति के नि:शुल्क उपचार के साथ-साथ भोजन एवं रहने आदि की भी व्यवस्था की जाती थी। इतिहासकार लिखते हैं कि एक बार शाहजहां का पुत्र दारा शिकोह किसी भयानक रोग से ग्रसित हो गया। अनेक वैद्यों-हकीमों से उसका इलाज करवाया गया, लेकिन कहीं से भी उसे स्वास्थ्य लाभ नहीं हुआ। हर तरह से निराश होकर शाहजहां अत्यंत चिन्तित हो गया। उसे किसी हकीम से गुरु जी के शफाखाने की खबर मिली और ज्ञात हुआ कि उनके पास हर मर्ज की दवा उपलब्ध है। अपने सामने अपने पुत्र को तिल-तिल मरते हुए देख उसके इलाज के लिए दुर्लभ औषधि की प्राप्ति हेतु उसने श्री गुरु हरिराय साहिब तक पहुंच की। गुरु जी ने दारा शिकोह का इलाज अपने शफाखाना में आए आम रोगी की भांति किया, न कि बादशाह-पुत्र जानकर। दारा शिकोह स्वस्थ हो गया।

पूर्णतया निरोग होकर दारा शिकोह गुरु जी के दर्शन हेतु आया और गुरु जी का धन्यवाद किया। गुरु-उपदेशों को श्रवण कर तथा सिक्खों के उच्च आचरण से वह बहुत प्रभावित हुआ।

कोमल एवं शांतचित्त गुरु पातशाह ने गुरबाणी का अपमान कर, गुरमति उसूलों से खिलवाड़ करने के कारण अपने बड़े पुत्र रामराय को कदाचित क्षमा नहीं किया। रामराय ने औरंगजेब के समक्ष करामातें दिखाईं और उसे प्रभावित करने के लिए पिता श्री गुरु हरिराय साहिब के आदेश की पूरी तरह से अवहेलना की। यह अवहेलना करामात दिखाने तक ही सीमित रहती, तो शायद दयालु हृदय श्री गुरु हरिराय साहिब अपने पुत्र को क्षमा कर भी देते, लेकिन गुरबाणी की तुक बदलने की गुस्ताखी को गुरु साहिब कदाचित माफ़ नहीं कर सकते थे। हुआ यूं कि जब औरंगजेब रामराय की करामातों से अत्यधिक प्रभावित हो गया तो उसने एक प्रश्न और रामराय से कर दिया कि तुम्हारे 'ग्रंथ साहिब' में इसलाम के खिलाफ ऐसा क्यों लिखा है— *''मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर॥''*

इस प्रश्न के जवाब में रामराय ने औरंगजेब की नजरों में अपना रुतबा बनाये रखने के लिए गुरु-पिता श्री गुरु हरिराय साहिब के आदेश, सिक्ख धर्म-मर्यादा तथा पवित्र उसूलों को भुला कर बादशाह को खुश करने के लिए बड़ी चालाकी से कहा कि वास्तव में यह पंक्ति ''मिटी मुसलमान की'' नहीं ''मिटी बेईमान की'' है। यह सुन कर बादशाह प्रसन्न हुआ और उसने प्रशस्ति-पत्र के साथ-साथ दून का इलाका रामराय को जागीर के रूप में प्रदान कर दिया।

जब श्री गुरु हरिराय साहिब को रामराय द्वारा गुरबाणी की तुक (पंक्ति) बदलने की खबर मिली तो गुरु जी ने उसे आजीवन माथे न लगने का आदेश भिजवा दिया । रामराय को गुरुआई हेतु हर प्रकार से अयोग्य जान कर अपने छोटे सुपुत्र श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को पूर्णतया योग्य जान कर सन् १६६१ में उन्हें गुरुआई प्रदान कर श्री गुरु हरिराय साहिब ज्योति-जोत समा गये। आपने सत्रह वर्ष तक गुरुता को बड़े सुन्दर ढंग से सम्भाला और सिक्ख धर्म की जड़ों को मजबूती व सुदृढ़ता प्रदान की। मात्र ३१ वर्ष इस मातलोक में विचरण करते हुए जीवन के प्रत्येक पल को सिमरन एवं सेवा-कार्यों में लगाया। लंगर वितरित करने के दौरान नगाड़ा बजाना, सामूहिक रूप से खड़े होकर एकाग्रता से अरदास करने का विधान, गुरबाणी के प्रति गहरी निष्ठा, श्रद्धा एवं सत्कार बनाए रखने की प्रणाली को दृढ़ता प्रदान की । राजनीतिक प्रपंचों एवं आने वाले खतरों से संगत को सुचेत रहने की ताकीद करते हुए शाही तख्त से पंथ के सम्बन्धों के संदर्भ में सावधानी बरतने की जाच सिखाते हुए, खुशामद करने वालों से निरन्तर दूरी बना कर रखने का आदेश दिया। धार्मिक उसूलों का दृढ़ता से पालन करना, जरूरतमंद की मदद करने के हिदायत के साथ-साथ सिक्खी प्रचार के लिए तीन केन्द्र भी स्थापित किये।

गुरु जी के विलक्षण व्यक्तिव को शब्दों द्वारा बयान करना नामुमकिन है। आओ! उनके पावन उपदेशों को आत्मसात् कर उनके पद-चिन्हों पर चलने का सद् प्रयास करें, ताकि हमारा यह बेशकीमती मानव जीवन सफल हो सके।

भक्त रविदास जी का गहरा भक्ति-रंग— *मुकंद मुकंद जपहु संसार*

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

परमात्मा-प्रेम की गहराई मापी नहीं जा सकती। मन परमात्मा में जितना रमता जाता है, उसके प्रेम का रंग उतना ही चटक और पक्का होता जाता है। प्रेम में एक अवस्था ऐसी आती है कि पूरा संसार ही प्रेम में रंगा दिखाई देने लगता है। परमात्मा के अतिरिक्त कुछ दिखता ही नहीं। जो महान आत्मा प्रेम में संतृप्त हो जाती है वह सारे संसार को प्रेममय बनाने में समर्थ हो जाती है। भक्त रविदास जी ऐसी ही पुण्यात्मा थे जो परमात्मा-प्रेम में इतने गहरे उतरे कि परमात्मा में अभेद हो गये। अपना कोई रंग नहीं रहा, कोई रूप नहीं रहा। रंग भी परमात्मा का, रूप भी परमात्मा का। प्रेम में सर्वस्व अर्पण करने के बाद प्रेम ही बचता है :

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही॥
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि
जल केवल जल मांही॥ (पन्ना ६५७)

जब तक मनुष्य अपने रंग-रूप की चिंता में रहता है तब तक परमात्मा का रंग नहीं चढ़ता। जब स्व को विस्मृत कर देता है तब परमात्मा का रंग चढ़ने लगता है। जब स्व आलोप हो जाता है, मन-तन परमात्मामय हो जाता है। यह जीवन की सर्वश्रेष्ठ अवस्था है जिसे परम सिद्धि कहा गया है। भक्त रविदास जी चमड़े की जूतियां बनाने का काम करते थे। उनकी आत्म-सिद्धि ने उनकी इस किरत को ही भक्ति बना दिया था। ठीक उसी तरह जैसे करतारपुर साहिब में खेती श्री गुरु नानक साहिब की भक्ति का अंग व रंग बन गई थी। भक्त रविदास जी ने परमात्मा में रम जाने को सांसारिक दृष्टि से समझाते हुए कहा कि तूफ़ान, तेज हवा से सागर में बड़ी-बड़ी लहरें उठती हैं तो लगता है कि यह सागर के जल से भिन्न कोई रचना है, किन्तु वास्तव में ये उठी लहरें सागर का जल ही हैं। जब परमात्मा का रंग गहरा और पक्का हो जाये तो भक्त सांसारिक दृष्टि में जैसा भी दिखे वह परमात्मा का अंग ही होता है। परमात्मा में और उसमें कोई भेद नहीं रहता। भक्त रविदास जी ने परमात्मा-प्रेम की इस श्रेष्ठतम अवस्था में बड़े अधिकार के साथ परमात्मा को ही सम्बोधित करते हुए कहा कि मुझमें और तुममें अंतर कहां रह गया है! प्रेम में अधिकार की अनुभूति होना प्रेम और समर्पण का एक अद्‌भुत व विलक्षण आयाम है, जो भक्ति को नूतन ऊंचाइयां प्रदान करता है। भक्त रविदास जी की बाणी में इसका अनुभव परम आनन्द प्रदान करने वाला है। भक्त रविदास जी ने कहा कि अंतर है, किन्तु वैसा ही है जैसा सोने और सोने के आभूषण में अथवा जल और जल में उठने वाली लहर में होता है।

परमात्मा से प्रीति कभी न टूटने वाली हो। मनुष्य के अंदर का प्रेम, परमात्मा से बने उसके सम्बन्ध को मनुष्य स्वयं कभी न तोड़े। भक्त रविदास जी ने कहा कि परमात्मा के अतिरिक्त

ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५१-६०५३३ , ८४१७८-५२८०९

मनुष्य के पास कोई विकल्प ही नहीं है। कोई ऐसा है ही नहीं जिससे वह मन जोड़ सके। मोर के पास उल्लास के लिये पर्वत के अतिरिक्त कोई अन्य स्थान नहीं है। चकोर पक्षी चन्द्रमा को छोड़ कर अन्यत्र कहां जाये! परमात्मा और मनुष्य का सम्बन्ध तो दीपक और बाती जैसा है। बाती दीपक में जलने के लिये ही बनी है। भक्त रविदास जी परमात्मा-प्रेम की गहनता को भली-भांति समझ चुके थे। यह अनुभूति उन्हें जीवन के आरंभिक काल में ही हो गई थी। इसका ही परिणाम था कि उनके परिवार ने, जो उन्हें सांसारिक दृष्टि से देख रहा था, घर से अलग कर दिया। घर-परिवार से अलग कर दिया जाना उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया, किन्तु परमात्मा से जोड़ी प्रीति की डोरी तोड़ना स्वीकार नहीं किया था। परिवार के मोह से सम्बन्ध टूटा, विकारों-माया से बंधन टूटा, तभी परमात्मा से सम्बन्ध बना :

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥ ३ ॥
जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥
तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥ (पन्ना ६५९)

मन में प्रीति या परमात्मा की हो सकती है या संसार की। दोनों के लिये ही प्रीति हो ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि दोनों भिन्न-भिन्न मार्ग हैं। दुविधा, द्वैत में भक्ति का कोई फल नहीं प्राप्त होता। परमात्मा की भक्ति का भाव उससे सच्ची प्रीति का रंग चढ़ना है। विकार, माया आदि परमात्मा से दूर करने वाले हैं। इन्हें त्याग कर ही परमात्मा की शरण प्राप्त होती है। यह तन-मन का पूर्ण समर्पण है, जो भक्त रविदास जी ने किया और जिसके लिये मानव समाज को प्रेरित किया। इस मार्ग पर चलने के लिये अनेकानेक कठिन परीक्षायें देनी पड़ती हैं, किन्तु भक्त जी ने मनुष्य को आश्वस्त करते हुए कहा कि जब भी विघ्न आते हैं, सर्वत्र परमात्मा सहायता करता है, लाज रखता है। ऐसा दयालु, कृपालु, सर्वसमर्थ और कोई है ही नहीं। मनुष्य संसार में कितना ही धन, संपदा, शक्ति, पदार्थ एकत्र कर ले, वे सारे व्यर्थ हैं। परमात्मा की कृपा और दया के बिना मनुष्य की मर्यादा नहीं बचती :

ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥
राम नाम बिनु बाजी हारी ॥ ४ ॥
मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी
ओछा जनमु हमारा ॥
तुम सरनागति राजा राम चंद
कहि रविदास चमारा ॥ (पन्ना ६५९)

परमात्मा की भक्ति, उसकी कृपा न हो तो जन्म व्यर्थ हो जाता है। जिस उद्देश्य से जन्म लेकर मनुष्य संसार में आया था वह प्राप्त नहीं हो पाता। यहां भक्त रविदास जी का स्पष्ट संकेत है कि संसार में आकर माया और भोग-विलास में रम जाना जीवन का उद्देश्य नहीं, बल्कि जीवन के उद्देश्य को पराजित करना है। इसके विपरीत परमात्मा की शरण व कृपा प्राप्त कर लेना सबसे बड़ी पूंजी व सम्मान है। उन्होंने सर्वोत्तम उदाहरण अपने व्यवसाय का दिया। इसे उन्होंने सांसारिक कार्य-व्यवहार के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। भक्त रविदास जी ने कहा कि लोग उन्हें जूतियां बनाने वाला भाव सांसारिक व्यक्ति समझ कर जूतियां बनवाने भाव सांसारिक कार्यों हेतु आते हैं, किन्तु मुझे जूतियां बनाने भाव सांसारिक प्रपंचों का ज्ञान ही नहीं है। मेरे पास जूतियां गांठने के औजार भाव सांसारिक व्यवहार

के धन, दौलत, चतुरता, ऊंची जाति, कुल आदि नहीं हैं। जो लोग जूतियां बनाना जानते हैं भाव सांसारिकता में प्रवीण हैं वे दिन-रात इसी में लगे हुए हैं और अपना जीवन निरर्थक कर रहे हैं। भक्त जी ने कहा कि उन्हें जूतियां बनाने भाव सांसारिकता का ज्ञान नहीं है, सांसारिक चतुरता और पदार्थ नहीं हैं, फिर भी उन्होंने जीवन का उद्देश्य अर्थात् परमात्मा की शरण प्राप्त कर ली है।

अपनी सादगी, सहजता और सरलता से भक्त रविदास जी ने आत्मिक सिद्धि प्राप्त कर ली थी। उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई थी। लोग उनके दर्शन करने आते और उनका यश गायन करते थे। उन्होंने कभी अपनी आत्मिक श्रेष्ठता का श्रेय स्वयं नहीं लिया। यह उनकी विनम्रता थी कि वे स्वयं को अवगुणों से भरा ही मानते थे, जिनके अवगुण मिटा कर परमात्मा ने उन्हें गुणों से भरपूर कर दिया था। वास्तव में उनका संदेश समूची मानवता को था कि अपने अवगुणों को पहचानने और उन्हें स्वीकार कर, परमात्मा की कृपा से उन्हें दूर करने में ही उद्धार है। परमात्मा चन्दन के वृक्ष की तरह है, जिसकी संगत में आने पर इरंड जैसे गुणहीन वृक्ष में भी चन्दन की सुगंध बस जाती है। मनुष्य की गति परमात्मा के चरणों में ही है :

तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥
पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥

(पन्ना ४८६)

मानव-मन का वास्तविक निवास, ठौर परमात्मा के चरणों में है। परमात्मा के चरणों की शोभा भी कमल के सुंदर पुष्प की तरह है। उसके चरण-कंवलों में मन का रम जाना भक्ति का सार्थक हो जाना है। इसमें ही जीवन की सफलता और सच्चा सुख है। परमात्मा के चरणों में मन जोड़ने की प्रेरणा जब मनुष्य की दीनता और असहाय अवस्था से उपजती है तभी पूर्ण समर्पण व याचना आकार लेती है। जब मनुष्य के मन से माया का भ्रम व मोह दूर होता है और विकारों की वास्तविक शत्रुओं के रूप में पहचान होती है, तब वह स्वयं को दीन-हीन महसूस करता है। उसे ज्ञात हो जाता है कि उसकी दौलत, शक्ति, कुल, जाति, ज्ञान आदि कुछ भी उसका उद्धार नहीं कर सकते। उस समय परमात्मा ही एक तारनहार नज़र आता है। ऐसी दीनता में परमात्मा के प्रति उत्पन्न होने वाला प्रेम अमूल्य लगने लगता है, जिसे मनुष्य यत्नों से सहेज कर रखना चाहता है :

मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥
मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥

(पन्ना ६९४)

जिसके मन में परमात्मा की सच्ची प्रीति उत्पन्न हो जाये वही इसका मोल समझता है। वह सदैव सचेत रहता है कि यह प्रीति बनी रहे और कभी कम न हो। मनुष्य बड़े परिश्रम से धन अर्जित करता है। वह कभी नहीं चाहता कि उसका धन कभी कम हो। अपने जमा किये धन को वह बढ़ाना ही चाहता है, जबकि यह धन चंचल है और आने-जाने वाला है। इसके विपरीत परमात्मा के लिये प्रेम सच्चा धन है, जिसे अर्जित करना सांसारिक धन की अपेक्षा कहीं अधिक कठिन है, सर्वाधिक कठिन है। इसे प्राप्त करने के लिये मनुष्य को बदले में अपना स्व अर्पित कर देना पड़ता है। इससे अधिक मूल्यवान सौदा और क्या हो सकता है! इतनी महंगी कीमत अदा कर प्राप्त किये गये परमात्मा के प्रेम का कम होना मनुष्य को कभी भी स्वीकार नहीं होता। भक्ति की यह दृष्टि मनुष्य को

सदैव सचेत ही नहीं करती, एकाग्रचित्त भी रखती है। इस आत्मिक अवस्था को प्राप्त करने वाला मनुष्य अपना सारा जीवन परमात्मा को समर्पित कर देता है। उसकी एकाग्रता कैसी हो, इसका अति सुंदर वर्णन भक्त रविदास जी ने अपनी बाणी में किया है। यह वचन इतना अनमोल है कि परमात्मा की भक्ति करने वाले सभी जनों को इसे सदैव के लिये आत्मसात कर लेना चाहिये :

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो
स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ
रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ॥ (पन्ना ६९४)

गुरु साहिबान ने भी दिवस-रात, पल-पल परमात्मा की भक्ति को अर्पित कर देने की प्रेरणा दी है। भक्त रविदास जी ने भी उसी के अनुरूप परमात्मा में रम जाने की राह दिखाई है। उन्होंने कहा कि मनुष्य के मन में सदैव परमात्मा का सिमरन चलता रहे। सांसारिक वासनाओं के वश होकर वह कभी परमात्मा को विस्मृत न कर दे। मन परमात्मा के प्रेम में सदा निर्मल बना रहे। संसार में चारों दिशाओं में माया का प्रसार है। मनुष्य इसमें भ्रमित न हो, सर्वत्र परमात्मा के सर्वव्यापी रूप के दर्शन कर भटकन से बचा रहे। वह सदैव परमात्मा का यश, परमात्मा के प्रिय सच की वार्ता ही सुने व धारण करे, जिससे परमात्मा में रमे मन को कोई व्यवधान न पहुंचे। मन भौरे की तरह परमात्मा के प्रेम में पड़ा रहे अर्थात् अन्य कोई विचार मन में जन्म ही न ले, जो परमात्मा से तोड़ने वाला हो। मन में सदैव विनम्रता का भाव रहे जो परमात्मा के चरणों से जोड़ने वाला हो। उसके मुख से सदैव परमात्मा का यश, उसके लिये आभार के शब्द, उसे प्रिय लगने वाले वचन ही निकलें। उसे इसी में तृप्ति प्राप्त हो। इस तरह भक्ति पल-पल की होनी चाहिये और तन-मन का सम्पूर्ण समर्पण होना चाहिये। यह मन और तन का सदुपयोग है जो परमात्मा से पक्का सम्बन्ध स्थापित करता है। ऐसी ही भक्ति उन्होंने करके भी दिखाई। कोई श्रद्धालु उनके पास पारस पत्थर रख गया ताकि उनके जीवन के अभाव दूर हो सकें, किन्तु उनके नयनों में तो सबसे अनमोल परमात्मा बसा हुआ था। उन्हें पारस पत्थर दिखता ही कैसे! काशी जैसे नगर में, जो विद्वानों, धर्माचार्यों से भरा पड़ा था, भक्त रविदास जी की प्रतिष्ठा का सूर्य की किरणों की तरह फैलना उनकी सच्ची सिद्धि का परिचायक था। जो उनकी जाति, उनकी दरिद्रता का उपहास करने वाले थे, उनके समक्ष नत्मस्तक होने लगे थे। भक्त जी ने इसे परमात्मा की कृपा के रूप में देखा। उनके अंतर की निर्मलता, विनम्रता सदैव प्रकाशित रही। उनके काल में समाज जाति, वर्ण में बुरी तरह से विभक्त था और भेदभाव का गहरा प्रभाव था। भक्त रविदास जी ने कहा कि श्रेष्ठता प्रदान करना मात्र परमात्मा के हाथ में है :

ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री
डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥
होइ पुनीत भगवंत भजन ते
आपु तारि तारे कुल दोइ ॥ (पन्ना ८५८)

संसार भले ही किसी को ब्राह्मण, किसी को क्षत्रिय, किसी को वैश्य, किसी को शूद्र या उससे भी निम्न डोम, चंडाल या मलिन कहता रहे, किन्तु यह प्रयोजनहीन है। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। कोई भी परमात्मा की भक्ति से आत्मिक श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है। परमात्मा की कृपा से

उसको तो श्रेष्ठता प्राप्त होती ही है, उसके दोनों कुल अर्थात् माता व पिता के कुल भी सद्‌गति पा जाते हैं। श्रेष्ठता जाति, वर्ण से नहीं, परमात्मा की भक्ति तथा कृपा के अधीन है और बिना किसी भेदभाव के सभी इसे पाने के समान भाव से अधिकारी हैं। भक्त रविदास जी की महानता थी कि जाति, वर्ण के भेदभाव को सहने के बाद भी उनके हृदय में सर्वकल्याण की कामना थी :

सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥

(पन्ना ८५८)

यह उनकी कामना और प्रेरणा थी कि सभी जीव परमात्मा की भक्ति की राह पर चलें। उन्होंने किसी एक वर्ग, वर्ण नहीं, पूरे संसार को 'मुकंद मुकंद' जपने का आह्वान किया। संपूर्ण संसार को वे परमात्मामय बनाना चाहते थे। वे जानते थे कि परमात्मा की कृपा के बिना जीवन निरर्थक है :

सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥
सोई मुकंदु हमरा पित माता ॥ १ ॥
जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥
ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥ (पन्ना ८७५)

भक्त रविदास जी ने कहा कि परमात्मा ही माया, विकारों और यम के भय से मुक्त करने वाला है। वह समस्त जीवों का सृजनकर्ता, पालक और तारनहार है। वह इस लोक में भी सहायक है और परलोक में भी। जिसने परमात्मा को अपना स्वामी धारण कर उसकी शरण ले ली उसे सद् आनन्द की अवस्था प्राप्त हो जाती है।

भक्त रविदास जी का परमात्मा के साथ प्रेम, आनन्द की उस अवस्था में पहुंचा हुआ था जहां सर्वत्र आनन्द ही आनन्द था। जब भक्ति आनन्द का सागर बन जाये तो परमात्मा से आत्मीयता का रंग ऐसा चढ़ता है कि चाव बन जाता है। इसी चाव में उनका परमात्मा से किया संवाद भक्ति का विस्माद उत्पन्न करने वाला है :

जउ हम बांधे मोह फास
हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥
अपने छूटन को जतनु करहु
हम छूटे तुम आराधे ॥ (पन्ना ६५८)

भक्त रविदास जी प्रेम के गहरे रंग की उमंग में परमात्मा से अंतरंगता परिपूर्ण संवाद करते हैं कि मैं तो तुम्हारे प्रेम के बंधन में बंध गया हूं। मैंने उस प्रेम-बंधन में तुम्हें भी बांध लिया है अर्थात् अब तुम मेरा प्रेम, मेरी भक्ति को नकारने की स्थिति में नहीं हो। यह उनकी भक्ति का अपूर्व विश्वास था।

भक्त रविदास जी यहीं नहीं रुके। उन्होंने इस अंतरंगता को अधिक मनमोहक बनाते हुए कहा कि मैं तो तुम्हारी आराधना कर, तुम्हारी कृपा से सभी बन्धनों से मुक्त हो जाऊंगा, किन्तु यह सोचो कि तुम कैसे मेरे प्रेम-बंधन से मुक्त हो सकोगे, क्योंकि तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम का बंधन टूटने वाला नहीं है। इसका भाव था कि यदि परमात्मा के लिये प्रेम और विश्वास अटूट एवं गहरा हो तो परमात्मा सदैव और हर अवसर पर अपने भक्त की लाज रखता है, उसकी रक्षा करता है। परमात्मा सदैव अपने भक्त के प्रेम के वश में रहता है।

भक्त रविदास जी पूरे संसार में इस प्रेम और विश्वास की भावना का प्रसार चाहते थे, तभी उन्होंने 'बेगमपुरा' की कल्पना सामने रखी थी, जहां कोई दुख, अधर्म, अन्याय न हो, आनन्द ही आनन्द हो।

बाबा हनूमान सिंघ जी शहीद

*- स. सिमरजीत सिंघ**

बाबा हनूमान सिंघ जी वे महान शहीद हैं, जिन्होंने बुड्ढा दल निहंग सिंघों की जत्थेबंदी के मुख्य जत्थेदार होते हुए देश की आज़ादी के लिए अंग्रेज़ों के विरुद्ध हक-सच की लड़ाई लड़ते हुए शहादत प्राप्त की थी। बुड्ढा दल सिक्ख पंथ का, ख़ास कर निहंग सिंघों का अटूट अंग है। निहंग सिंघ सिंघों की पुरातन रिवायतों के अनुसार अपना जीवन बसर करते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-जोत समा जाने के बाद सिक्खों के संघर्ष का दौर शुरू हो गया था। ऐसे समय में भी संगत गुरुद्वारा साहिब की पवित्रता को हर हाल में कायम रखती रही, चाहे इसके लिए अनेक बार कुर्बानियां भी देनी पड़ीं। *''मरउ त हरि कै दुआर''* की विचारधारा को सिक्खों ने अनेक बार अमली जामा पहना कर सिद्ध किया। श्री हरिमंदर साहिब, श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर की हो रही बेअदबी को रोकने के लिए सिक्खों ने कभी भाई महिताब सिंघ, भाई सुक्खा सिंघ, बाबा दीप सिंघ जी, बाबा गुरबखश सिंघ जी के रूप में और कभी सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया बन कर इसकी पवित्रता को कायम रखा।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर को युद्धों के दौरान बंदी बना लिया गया। उन्हें आठ सौ सिंघों सहित दिल्ली में बड़ी बेरहमी से शहीद कर दिया गया। इन घटनाओं के साथ ही समय की मुग़ल हुकूमत ने सिक्खों का कत्ल-ए-आम करना शुरू कर दिया। सिक्ख जंगलों की कंदराओं में जा बसे। ऐसे भयानक समय में सिक्खी का प्रचार तो एक तरफ़ रहा, सिक्ख का नाम लेने वाले को भी मौत के घाट उतार दिया जाता था। श्री हरिमंदर साहिब, श्री दरबार साहिब के पवित्र स्थान को ढह-ढेरी कर दिया गया। गाँवों-शहरों में यदि कोई गुरु-स्थान था तो उसका प्रबंध उदासी साधुओं ने अपने हाथ में ले लिया। ये उदासी साधु भी सिक्खी-प्रचार के अभाव में ग़ैर-सिक्ख विचारों से प्रभावित होते जा रहे थे। हुकूमत से भयभीत होकर ये लोग अपने आप को हिंदू ही बताने लग गए थे। इन सभी कारणों से इन स्थानों में से सिक्खी की रंगत ख़त्म होती जा रही थी। यदि सिक्ख छिप-छिप कर अपने धर्म-स्थानों के दर्शन के लिए

**मुख्य संपादक व उप सचिव, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर, फोन : ९८१४८-९८२२३*

आते भी थे तो केवल प्रेम–भावना और श्रद्धा–भाव के साथ बहुत ही कम समय के लिए। उन्हें मुश्किल से इतना ही समय मिलता था। ऐसे हालात में उनके पास इतना समय नहीं होता था कि वे रहित मर्यादा की जांच–पड़ताल कर सकते। यदि कहीं सिक्खों को इकठ्ठा होने का समय भी प्राप्त होता तो वे अपने आप को बचाने और शत्रु को पार बुलाने के लिए ही विचार करते।

बुड्ढा दल के स्थापित होने के बारे में विचार है कि २९ मार्च, सन् १७३४ ई. में श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर में ख़ालसे का जलसा हुआ, जो ६५ जत्थों में बँटा हुआ था। इसे एक दल में इकट्ठा कर 'दल खालसा' नाम दिया गया। 'दल खालसा' को आगे दो दलों में विभाजित किया गया— बुड्ढा दल और तरना (तरुणा) दल। चालीस वर्ष से कम उम्र वाले सिंघों के दल को 'तरना दल' नाम दिया गया और इससे अधिक आयु के सिंघों के जत्थे को 'बुड्ढा दल' कहा जाने लगा। इन जत्थों की मुख्य शक्ति नवाब कपूर सिंघ के पास रही। बाद में जत्थेदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने कमान संभाली।

तरना दल आगे से पाँच जत्थों में बाँट दिया गया। ये पाँच जत्थे थे :—

१. जत्था शहीदां, २. जत्था अमृतरियां, ३. बाबा काहन सिंघ का जत्था, ४. जत्था डल्लेवालियां, ५. रंघरेटे सिंघों का जत्था। इन पांच जत्थों के जत्थेदारों के साथ और भी प्रमुख सिंघ थे। १७३९ ई. में नादिर शाह के हमले के बाद पंजाब में कोई हुकूमत काम नहीं कर रही थी। इस समय सिंघ ज़ोर पकड़ गए। सिंघों का सरकार के विरुद्ध संघर्ष तेज होता गया। १४ अक्तूबर, १७४५ ई. को दल ख़ालसा का जलसा हुआ। यहाँ दल ख़ालसा को आगे तीस छोटे जत्थों में बाँट दिया गया। जनवरी, १७४८ ई. में अब्दाली के आक्रमण शुरू हो गए। इस समय ख़ालसा के छोटे–छोटे जत्थों के और जत्थे बन गए। यह संख्या ६६ तक पहुँच गई। १७४८ ई. की वैसाखी को ख़ालसे का जलसा हुआ। नवाब कपूर सिंघ ने प्रस्ताव पेश किया कि पंथ की एक मज़बूत जत्थेबंदी बनाई जाये। यह प्रस्ताव सभी ने स्वीकार कर लिया और पूरे पंथ की सांझी जत्थेबंदी का नाम 'दल ख़ालसा' रखा गया। 'दल ख़ालसे' का जत्थेदार सर्वसम्मति से सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को चुना गया। उसके अधीन ग्यारह मिसलें बनाई गईं। मिसलें ये हैं— १. मिसल आहलूवालिया, २. मिसल फ़ैज़लापुरियां या सिंघपुरियां, ३. मिसल शुकरचक्कियां, ४. मिसल निशानांवाली, ५. मिसल भंगियां, ६. मिसल कन्हईआं, ७. मिसल नकईआं, ८. मिसल डल्लेवाली, ९. मिसल करोड़ा सिंघियां, १०.

मिसल सांघणियां, ११. मिसल शहीदां। १२वीं मिसल फूलकिया इनसे अलग है, जिसका संस्थापक सरदार आला सिंघ पटियाला है।

५ फरवरी, १७६२ ई. को कुप्प रुहीड़ा के मैदान में अब्दाली और ख़ालसा फौज की सीधी टक्कर हुई। ख़ालसे का भारी नुकसान हुआ। इसे 'बड़ा घल्लूघारा' कहा जाता है। दिसंबर, १७६२ ई. में अब्दाली के वापस काबुल जाने के बाद सिंघ फिर श्री अमृतसर में इकट्ठा हुए। दल ख़ालसा जत्थेबंदी को फिर नये सिरे से स्थापित किया गया। दो बड़े जत्थे बनाए गए, बुड्ढा दल— जिसमें आहलूवालिया, सिंघापुरियां, डल्लेवालियां, करोड़ासिंघिया, निशानांवाली और शहीदांवाली छ: मिसलें शामिल थीं, जिनका प्रमुख जत्थेदार सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया था। तरना दल— भंगी, रामगढ़िया, कन्हईआं, नकईआं, शुकरचक्किया, पाँच मिसलें थीं और इनका जत्थेदार सरदार हरी सिंघ भंगी था। इसे गुरुधामों की सेवा प्रदान की गई।

कुछ समय बाद जब मिसलों का समय आया तो सिक्ख अपने-अपने जत्थे बना कर जंगलों से बाहर आ गए। इस समय भी उनके पास अपने पैरों पर खड़े होने का समय बहुत कम था और वे अपने-अपने दल को मज़बूत करने, समय की हुकूमत को ख़त्म करने और बाहर से आ रहे हमलावरों को रोकने में ही लगे रहे। ऐसे समय में गुरमति के जीवन-व्यवहार वाले विचारों का प्रचार करना बहुत मुश्किल था। इस प्रकार लगभग सौ वर्ष का समय ऐसा बीता, जिसमें सिक्खी के प्रचार को बहुत बड़ा नुकसान पहुंचा।

उन्नीसवीं सदी के आरंभ में महाराजा रणजीत सिंघ ने पंजाब में सिक्ख राज (शासन) की नींव रखी। महाराजा रणजीत सिंघ के राज के साथ ही फूलकिया रियासतें भी स्थापित हुईं। फूलकिया रियासतें अंग्रेज़ी राज (शासन) के प्रभाव तले थीं। महाराजा रणजीत सिंघ का ज्यादातर समय अपने शासन को स्थिर करने और फिर पश्चिमी सरहद के पठानों के साथ युद्ध करने में लग गया। जहाँ तक हो सका, महाराजा रणजीत सिंघ ने सिक्ख गुरु साहिबान और शहीद सिंघों की यादगार वाले स्थानों पर गुरुद्वारा साहिबान का निर्माण करवाया। महाराजा रणजीत सिंघ ने सिक्खी के स्रोतों को स्वस्थ करने के लिए पूरा ज़ोर लगाया, गुरुद्वारों के नाम जागीर लगवाई।

महाराजा रणजीत सिंघ के शासन-काल के समय भी निहंग सिंघों की मिसल आज़ाद रही। महान पवित्र जीवन वाले अकाली फूला सिंघ जी निहंग सिंघों की फ़ौज बुड्ढा दल के जत्थेदार थे, जिनके हर हुक्म के समक्ष शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ सिर झुका दिया करते थे। निहंग सिंघों की फ़ौज को

'अकाल रेजिमेंट' नाम दिया गया था। यह ग़ैर-आइनी फ़ौज थी। इन्होंने आइनी फ़ौज की भांति अंग्रेज़ आफिसरों से कोई प्रशिक्षण नहीं लिया था, क्योंकि इन्होंने महाराजा रणजीत सिंघ को यह कह दिया था कि हम औरत की तरह नाचने का प्रशिक्षण अंग्रेज़ों से नहीं लेंगे। हमें जब कहोगे, युद्ध के मैदान में तूफान ला देंगे। इन्होंने अंग्रेज़ फ़ौज वाली वर्दी धारण नहीं की थी और न ही अंग्रेज़ों वाली युद्ध-नीति अपनाई। अपना नीला पहरावा, अस्त्र-शस्त्र परंपरावादी ढंग वाले ही धारण किये और पुरानी रिवायती युद्ध-कला को अपना कर हर मैदान में लड़े।

यही कारण है कि अंग्रेज़ों और अंग्रेज़ समर्थक इतिहासकारों ने निहंग सिंघों के विरुद्ध लिखा है। उन्हें हर क्षेत्र में नज़र-अंदाज़ किया जाने लगा।

अकाली फूला सिंघ ने महाराजा रणजीत सिंघ के साथ कई जंगों में हिस्सा लिया। ये इतने साहस के साथ जंग के मैदान में जूझते कि दुश्मन दंग रह जाता। मुलतान की लड़ाई, पेशावर की जंग, कश्मीर की जंग, सूबा सरहद एवं पठानों के साथ जंगों के दौरान अकाल रेजिमेंट की भूमिका अहम रही। एक बार अकाली फूला सिंघ जी ने अरदासा सोध कर नौशहरे की तरफ चढ़ाई की, परन्तु शेर-ए-पंजाब ने कहा कि अभी कुछ समय रुक कर चढ़ाई करनी चाहिए, क्योंकि पठान फ़ौज हमारी खालसयी फ़ौज से गिनती में ज्यादा है। यह सुन कर अकाली जी ने जवाब दिया कि मैं अरदासा सोध कर चला हूं, पीछे नहीं हट सकता। उन्होंने नौशहरे की जंग बड़ी शूरवीरता के साथ लड़ी और खुद शहीद होकर फ़तह (विजय) ख़ालसे को दिलाई।

अकाली फूला सिंघ के बाद बुड्ढा दल की कमान बाबा हनूमान सिंघ जी ने संभाली। पंजाब प्रदेश के ज़िला फ़िरोज़पुर की तहसील ज़ीरा में नौरंग सिंघ वाला गाँव है। यह गाँव जीरा-मल्लांवाला सड़क पर आबाद है। रेलवे स्टेशन मल्लांवाला इस गाँव से २४ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसी गाँव में बाबा हनूमान सिंघ जी का जन्म सन् १७५६ ई. में हुआ।

निहंग सिंघ अंग्रेज़ों को बिलकुल पसंद नहीं करते थे और न ही चाहते थे कि महाराजा रणजीत सिंघ उनके साथ दोस्ताना सम्बन्ध रखे। अकाली फूला सिंघ और उनके साथी इस बात के ख़िलाफ़ थे कि महाराजा रणजीत सिंघ अंग्रेज़ों के साथ कोई संधि करे, परंतु महाराजा रणजीत सिंघ अंग्रेज़ों के साथ सुखदायक सम्बन्ध बनाना चाहते थे। निहंग सिंघ अंग्रेज़ आफिसर और उनके कारिंदों के जीवन के लिए हमेशा ख़तरा रहे। जब कोई बड़ा अंग्रेज़ अधिकारी या राजनीतिज्ञ पंजाब का दौरा करने के लिए आता, तो महाराजा को

उसकी सुरक्षा के लिए विशेष प्रबंध करने पड़ते थे। इस बारे स. खुशवंत सिंघ ने लिखा है कि जब मेटकाफ महाराजा रणजीत सिंघ के साथ खालसा राज की सरहदों के बारे में विचार कर रहा था तो निहंग सिंघों एवं मेटकाफ के सुरक्षा-कर्मियों के बीच मुठभेड़ हुई थी। समकालीन स्रोतों में उसने विस्तार सहित उदाहरण दी है।

१८३९ ई. में महाराजा रणजीत सिंघ का देहांत हो गया और उसके बाद लाहौर दरबार में दुखद घटनाएँ घटने लगीं। इन घटनाओं का फ़ायदा उठाते हुए लाहौर के उच्चाधिकारी प्रधान मंत्री राजा लाल सिहुं और सिक्ख फ़ौज के कमांडर राजा तेज सिहुं को अंग्रेज़ों ने मदद करने तथा सिक्ख फ़ौज के साथ धोखा करने के लिए मना लिया और इससे सम्बन्धित साजिशें तैयार कर ली गईं। महाराजा रणजीत सिंघ के अकाल प्रस्थान के बाद प्रमुख सिक्ख घरानों का अहम रोल रहा है। कुछ एक सिक्ख घराने ऐसे थे, जिन्होंने अंग्रेज़ों की अधीनता स्वीकार न की और उनके इशारों पर न चले। उन्हें अपनी जागीरें भी ज़ब्त करवानी पड़ीं। कुछ एक घराने पारिवारिक गुटबंदी का शिकार भी हुए।

पंजाब प्रदेश के ज़िला और तहसील फ़िरोज़पुर में मुदकी नामक एक कसबा है। यह कसबा तलवंडी भाई-फरीदकोट सड़क पर रेलवे स्टेशन तलवंडी भाई से १० किलोमीटर की दूरी पर आबाद है। सन् १८४५-४६ में अंग्रेज़ों और सिक्खों के बीच इसी स्थान पर जंग हुई। अंग्रेज़ सरकार वर्षों से पंजाब पर कब्ज़ा करने की योजना बना रही थी और आने-बहाने पंजाब पर हमला करना चाहती थी। सिक्ख राज के ग़द्दारों— गुलाब सिहुं डोगरा, तेज सिहुं, मिसर लाल सिहुं आदि ने अंग्रेज़ों के साथ गुप्त संधि कर सिक्ख राज को अंग्रेज़ों के अधीन करने का घातक फ़ैसला करके अंग्रेज़ों की मंशा पर फूल चढ़ाए। महारानी जिंद कौर ने सिक्ख राज को बचाने के लिए एक चिट्ठी सरदार शाम सिंघ अटारी और एक चिट्ठी बाबा हनूमान सिंघ जी को लिख कर सिक्ख राज को बचाने की विनती की।

११ दिसंबर, १८४५ ई. को सिक्ख फ़ौज ने लाल सिहुं और तेज सिहुं के नेतृत्व में दरिया सतलुज पार किया और १३ दिसंबर, १८४५ ई. को लार्ड हार्डिंग गवर्नर जनरल ने सिक्खों के विरुद्ध जंग का एलान कर दिया। उस समय अंग्रेज़ों के पास फ़िरोज़पुर में केवल ८००० सैनिक थे। यदि लाल सिहुं उस समय अंग्रेज़ों पर हमला कर देता तो अंग्रेज़ों की हार निश्चित थी, परन्तु उसने ऐसा न किया, बल्कि फ़िरोज़पुर के सहायक एजेंट निकल्सन की सलाह से सिक्ख सेना को पहले ही निश्चित योजना के अनुसार अलग-थलग कर दिया। एक डिवीज़न को लुधियाना भेज दिया गया।

एक ने सरदार शाम सिंघ अटारी के नेतृत्व में हरीके में पड़ाव कर लिया। दो डिवीज़नों का नेतृत्व फ़िरोज़पुर के निकट तेज सिहुं कर रहा था और बाकी की सेना फ़िरोज़पुर में लाल सिहुं के अधीन थी।

सिक्ख सेना को तब तक कोई कार्यवाही नहीं करने दी गई, जब तक सर ह्यूंग गफ के नेतृत्व में अंग्रेज़ सेना ने पूरी तैयारी न कर ली। अंग्रेज़ फ़ौज ने १२००० सैनिक, ४८ तोपें और चार घुड़सवार तोपखाने के दस्ते शामिल कर फ़िरोज़पुर से १५-१६ किलोमीटर की दूरी पर मुदकी गाँव आ पहुंची। लाल सिहुं छोटी-सी सिक्ख सेना, जिसमें २००० पैदल सैनिक, ३५०० घुड़सवार और २० तोपें शामिल थीं, लेकर मुदकी पहुँच गया। यहीं पर पहली लड़ाई हुई और लाल सिहुं लड़ाई शुरू होते ही सिक्ख सेना को छोड़ कर भाग गया। सिक्ख सेना ने डट कर दुश्मनों का मुकाबला किया। सिक्ख अंग्रेज़ों के मुकाबले बहुत कम संख्या में थे और उन्हें अपने सेनापति की गद्दारी के कारण हार का मुँह देखना पड़ा।

बाबा हनूमान सिंघ जी द्वारा भी मुदकी के मैदान में यह जंग लड़ी गई थी। वे अपनी खालसा फ़ौज सहित शामिल हुए। बहुत सारी अंग्रेज़ फ़ौज को मौत के घाट उतारा और अंग्रेज़ टुंडे लाट को मार भगाया। 'जंगनामा सिंघां ते फिरंगीआं' में इस बारे में शाह मुहम्मद ने ज़िक्र किया है कि :

इक पिंड दा नाम जो मुदकी सी,
उथे भरी सी पानी दी खड्डु मियां।
घोड़े चढ़ ते नवें अकालीए जी,
झंडे देंवदे अग्गे जाइ गड्डु मीआं।
तोपां चल्लीयां कटक फरंगियां दे,
गोले तोड़दे मास ते हड्डु मीआं।
'शाह मुहंमदा' पिछांह नूं उठ नस्से,
तोपां सभ आए उथे छड्डु मीआं।
उधरों आप फरंगी नूं भांज आई,
दौड़े जाण गौरे दित्ती कंड मीआं।
चल्ले तोपखाने सारे बेड़ियां दे,
मगरों होई बंदूकां दी फंड मीआं।
किसे जाइ के लाट नूं खबर दित्ती,
लन्दन होइ बैठी तेरी रंड मीआं।
'शाह मुहंमदा' देख मैदान जा के,
रुलदी गोरिआं दी उथे झंड मीआं।
पहाड़ा सिंह सी यार फिरंगियां दा,
सिंघां नाल सी उस दी गैर साली।
पिच्छों भज के लाट नूं जाइ मिलिआ,
गल्ल जाइ दस्सी सारी भेत वाली।

बाबा हनूमान सिंघ जी ने सिंघों को साथ लेकर मुदकी की जंग में से बर्तानवी सेना को मार भगाया और सिक्ख राज की मदद की। यदि उस समय पटियाला, ज़ींद, फरीदकोट, कैथल आदि रियासतें अंग्रेज़ों के साथ न मिलती और सिक्ख फ़ौज के साथ सेनापति

गद्दारी न करते तो अंग्रेज़ों का पंजाब पर कब्ज़ा होना मुश्किल था। टुंडे लाट ने विलायत में खबरें भेज दी थीं और फ़ौज को हुक्म कर दिया था, भाग जाओ, जो भागना चाहता है! अकाली आ गए हैं, अब नहीं छोड़ेंगे। जब यह ख़बर सुनी तो सभी टापुयों पर अफरा-तफरी मच गई, जिसका शाह मुहम्मद ने ज़िक्र किया है :

लंदन टापूआं विच कुरलाट होइआ,
कुरसी चार हज़ार है सक्खणी जी।

अंग्रेज़ों के चार हज़ार आफिसर मर गये। इस प्रकार टुंडे लाट को मात देकर बाबा जी का जत्था पटियाला की तरफ आ गया। उधर पहाड़ा सिंघ फरीदकोटीए ने टुंडे लाट की मदद की। टुंडा लाट फौज लेकर लाहौर की तरफ बढ़ा। बाबा जी अपने जत्थे सहित पटियाला में गुरुद्वारा दूख निवारण साहिब आए, जिसे पहले 'निहंग सिंघां दा टोभा' कहा जाता था। पटियाला के बारे में उस समय यह कहावत प्रचलित थी कि 'तेरा घर सो मेरा घर' सिंघों ने समझा कि यह बात है कि 'तेरा घर सो मेरा घर' और साथ ही सिक्ख रियासत है। अत: बाबा जी ने इस बात पर एतबार कर श्री दूख निवारण साहिब और बग़ीची बाबा राजू सिंघ जी शहीद इन दोनों स्थानों पर अपने दल सहित उतारा किया। निहंग सिंघों का जत्था अभी आराम करने की तैयारियाँ ही कर रहा था कि पटियाला के राजा करम सिंघ ने अंग्रेज़ों से भयभीत होकर फौज उठा दी। राजा की फौज ने तोपों से आग बरसानी शुरू कर दी। निहंग सिंघों ने डट कर मुकाबला किया और बाबा हनूमान सिंघ जी ने खुद हमला कर खुद तोप के मुँह में भूरा दिया और तोपचियों को झटकाया। यहाँ १५०० सिंघ शहीद हुए। इन शहीद निहंग सिंघों की यादगार गुरुद्वारा दूख निवारण साहिब के निकट ऐतिहासिक बरगद के पेड़ के नीचे थी। बाबा जी यहाँ से घुड़ाम की तरफ चले गए। यहाँ भी फ़ौज के साथ मुकाबला हुआ। घुड़ाम में बाबा जी को एक तोप का गोला लगा, जिससे वे गंभीर रूप से ज़ख्मी हो गए। ज़ख्मी हालत में भी बाबा जी दुश्मनों का मुकाबला साहस के साथ करते रहे। यहाँ से आप राजपुरा से होते हुए कुम्बड़ा-सोहाणा पहुँच गए। कुम्बड़ा-सोहाणा साहिबज़ादा अजीत सिंघ नगर (मोहाली) तहसील का गाँव चंडीगढ़-सरहिंद सड़क पर स्थित है। रेलवे स्टेशन चंडीगढ़ यहाँ से १३ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस स्थान पर भी सख़्त लड़ाई हुई और बाबा हनूमान सिंघ जी ५०० सिंघों सहित १८४६ ई. में शहीद हो गए। इन शहीद सिंघों का दाह संस्कार सोहाणा में ही किया गया। यहाँ इन शहीद सिंघों की याद में साढ़े चार एकड़ में बहुत ही आलीशान इमारत सुशोभित है। बाबा हनूमान सिंघ जी ने ११ वर्ष बुड्ढा दल के मुख्य सेवादार के तौर पर सेवा- संभाल की।

सरदार चतर सिंघ

-डॉ. किरपाल सिंघ (दिवंगत)

अपने देश को अंग्रेज़ों की ग़ुलामी के बोझ तले से निकालने के लिए सरदार चतर सिंघ ने हथियारबंद बग़ावत जत्थेबंद करने में जो योगदान दिया, उसकी अपनी विशेष महत्ता है। वे उन गिने-चुने व्यक्तियों में से थे, जिन्होंने इस बात को समझ लिया था कि लाहौर दरबार के मुस्लिम सम्मति वाले इलाके में अंग्रेज़ जिस 'सांप्रदायिक झुकाव' की नीति पर अमल कर रहे हैं, उसका उद्देश्य भारत की इस महत्वपूर्ण सरहद पर उनकी धक्केशाही वाले राज को हमेशा के लिए वक्त दृढ़ करना है। अफगानिस्तान के अमीर दोस्त मुहम्मद खान के साथ गठजोड़ कर सरदार चतर सिंघ ने अंग्रेज़ अधिकारियों के इस नापाक मंसूबे को असफल करने का साहसीय यत्न किया।

इस बात का सही अंदाज़ा लगाने के लिए कि सरदार चतर सिंघ ने अंग्रेज़ों की 'बांटो और राज करो' की नीति का प्रभाव ख़त्म करने के लिए कितना काम किया, यह ज़रूरी है कि हम उन्नीसवीं सदी के पहले दो दशक से हज़ारे में घटित हो रहे घटनाक्रम का वर्णन करें, जब सैयद अहमद शाह ने सिक्ख सरकार के विरुद्ध जिहाद खड़ा किया था। उस समय अंग्रेज़ इलाके से कुछ कट्टर मुसलमान सैयद अहमद शाह बरेलवी के नेतृत्व में यहाँ आए थे और उन्होंने स्थानीय पठानों के मजहबी जोश को भड़का कर महाराजा रणजीत सिंघ की सरकार के विरुद्ध युद्ध किये थे। पहला युद्ध या जिहाद १८२३ ई. में किया गया जब सैयद अहमद का भतीजा अहमद अली शाह भारत में से अपने शिष्यों का एक भारी लश्कर भर्ती कर हज़ारे आया। यहाँ लगभग दो हज़ार आदमी इन जुनूनियों के साथ मिल गए। इस जिहाद ने महाराजा रणजीत सिंघ की सरकार के सामने एक भारी समस्या खड़ी कर दी। यह सही है कि जब सरदार हरी सिंघ नलवा ने अहमद अली शाह को पराजय किया और १८३० ई. में बालाकोट की लड़ाई में सैयद अहमद की मौत हो गई, तो यह लहर काफी हद तक ख़त्म हो गई। इस क्षेत्र के निवासियों में न तो पिशावरी पठानों की भांति पुरुषत्व का गुण था और न रावलपिंडी तथा जेहलम के पंजाबी मुसलमानों की भांति ये स्वतंत्रता के आशिक थे। इसी के विपरीत इनका स्वभाव हठी और उतावला था और ये जल्दी भड़क उठते थे, इसलिए इस क्षेत्र में थोड़ी-बहुत गड़बड़ लगातार जारी रही। पहले अंग्रेज़-सिक्ख युद्ध के बाद जब जम्मू-कश्मीर और हज़ारे का क्षेत्र महाराजा गुलाब सिंघ को

दिए जाने का फ़ैसला हुआ और १८४६-४७ ई. में जेम्ज़ ऐबट उसकी नयी रियासत की सीमा निर्धारित करने लगा तो गुलाब सिंघ ने हज़ारे के पठानों के हठी और भड़कीले स्वभाव से डर कर ही हज़ारे की जगह लाहौर दरबार का कोई अन्य क्षेत्र लेना स्वीकार कर लिया। इस सम्बन्ध में एच. डी. वाटसन ने लिखा है कि ''नवंबर १८४६ ई. में जब कैप्टन जेम्ज़ ऐबट हसन अब्दाल में पंजाब और कश्मीर के मध्य हद-बंदी का फ़ैसला कर रहा था तो हरीपुर के कबाइलियों का एक डेपूटेशन उसके पास उपस्थित हुआ। उन्होंने अंग्रेज़ सरकार के पास विनती की कि हमें कश्मीर के महाराजा की ग़ुलामी से बचाया जाए। कैप्टन ऐबट ने इस तबदीली की सिफारिश कर दी। वास्तव में उसने ही हज़ारे के इन कबाइलियों को उकसाया था कि वे इस तबदीली के लिए शोर मचाएं। जब सरदार चतर सिंघ को हज़ारे का गवर्नर नियुक्त किया गया तो साथ ही कैप्टन ऐबट को उसका असिस्टेंट स्थापित कर दिया गया, इसलिए उसे हज़ारे के कबाइलियों को उकसाने का मौका मिल गया।

प्रत्यक्ष है कि यह कार्यवाही किसी गुप्त सद्भावना को मुख्य रख कर ही की गई थी, परंतु सरदार चतर सिंघ मात्र नौजवान ही नहीं, बल्कि अनुभवी, बड़ी आयु वाला बुजुर्ग और लाहौर सरकार के अग्रणी दरबारियों में से था। वह तुरंत ही हज़ारे में इस नये प्रबंध की उलझनों को समझ गया। जब उसे हज़ारे की गवर्नरी पेश की गई तो इसकी तह में भारी शरारत देख कर उसने इसे स्वीकार करने में झिझक महसूस की। उधर से ऐबट झटपट अपने नये पद पर पहुँच गया और उसने रेज़िडेंट के पास गवर्नर की अनुपस्थिति के बारे में शिकायत की। अंतत: बहुत सारी प्रेरणा के बाद सरदार चतर सिंघ मान गया और जुलाई १८४७ ई. में वह हज़ारे पहुँच गया। जैसे पहले ही ख़तरा था, वृद्ध सरदार ने आते ही देख लिया कि नौजवान तथा ज़रूरत से ज्यादा चुस्त असिस्टेंट रेज़िडेंट ऐबट, लाहौर सरकार की प्रजा पर खुद सीधी हुकूमत करने पर तुला हुआ था और वह लाहौर दरबार के बाकायदा नियत किये गवर्नर को, जिसे उसने केवल सहायता और मशविरा देना था, मामूली जानता था।

चाहे सरदार चतर सिंघ ऐबट की शरारतें बर्दाश्त नहीं कर सकता था, परन्तु कुछ समय के लिए उसने उसे छूट दे दी। जब उसने देखा कि यह किसी तरह नहीं सुधरता तो वह साफ़-साफ़ बात कहने के लिए मजबूर हो गया। १ अगस्त, १८४८ ई. को उसने रेज़िडेंट को लिखा कि ''अंग्रेज़ों के साथ हमारी संधि यह है कि जब तक महाराजा बालिग़ नहीं होता, वे उसकी रक्षा करेंगे और जब वह हुकूमत करने के योग्य हो जाएगा तो इस देश के साथ कोई संबंध नहीं रखेंगे। मैं महसूस करता हूं कि ऐबट और उसके अन्य साथी जिस नीति पर अमल कर रहे हैं,

उसका उद्देश्य अंग्रेज़ों के सभी अधिकारों को ख़त्म करना नहीं, बल्कि पंजाब की मुसलमान आबादी को सिक्खों की दुश्मन बना कर अंग्रेज़ों की पकड़ को पक्का करना है।''

बस, इससे बात बढ़ गई और गवर्नर मुश्किल में फंस गया। जेम्ज़ ऐबट ने सरदार चतर सिंघ के आक्रोश का उत्तर इस प्रकार दिया कि मुसलमान किसानों को भड़काने के यत्न और ज्यादा तेज कर दिए। उसका उद्देश्य यह लगता था कि उस क्षेत्र में से सिक्ख फौज पर गवर्नर का खुरा-खोज ही मिटा दिया जाए।

ऐबट के इस मंसूबे पर और ज्यादा प्रकाश उसकी अपनी रिपोर्ट से पड़ता है, जो उसने लाहौर के रेज़िडेंट को भेजी थी। उसने लिखा था, ''मैंने हज़ारे के मुखिया लोगों को इकट्ठा कर हालात की समीक्षा की और उन्हें अपने कत्ल किये गए माता-पिता, मित्रों एवं रिश्तेदारों की याद दिला कर ललकारा कि वे उठ खड़े हों और सिक्ख फौज का खुरा-खोज मिटाने में मेरी मदद करें। मैंने इस भाव के परवाने पूरे क्षेत्र में जारी कर दिए और खुद एक सुरक्षित स्थान की तरफ कूच कर दिया। मैंने हथियारबंद किसानों को इकठ्ठा होने का हुक्म जारी कर दिया और सिक्ख फ़ौज को तबाह करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगाऊँगा।'' इससे साबित हो जाता है कि ऐबट कैसे हज़ारे के कबाइलियों में सिक्खों के विरुद्ध निम्न दर्जे के सांप्रदायिक जज़्बे उभारने का यत्न कर रहा था।

उसने इतने पर ही बस नहीं की। उसने दूसरा कदम यह उठाया कि उन दोनों सिक्ख रेज़िमेंटों को तनख़्वाह देने से इनकार कर दिया जो गवर्नर के साथ पाखली में डेरा जमाये बैठी थीं। उसकी आपत्ति यह थी कि ये रेज़िमेंटें मुलतान की बग़ावत में हिस्सा लेने या लाहौर की तरफ कूच करने का इरादा कर रही हैं।

अगर ऐबट अपने आप को अंग्रेज़ों का प्रतिनिधि मान कर यह कुछ करना ज़रूरी समझता था तो सरदार चतर सिंघ भी अपने महाराजा दलीप सिंघ और अपने देश का हार्दिक वफ़ादार था। वास्तव में मुलतान में दीवान मूल राज की बग़ावत बंनू, कोहाट, पिशावर और अन्य स्थानों पर सिक्ख रेज़िमेंटों के विद्रोह और मध्य पंजाब व जलंधर-दोआब में लोगों की हलचल आदि घटनाएँ आपस में जुड़ी हुई थीं। सब जगह कारण एक ही था कि लाहौर में ऊपर-ऊपर से महाराजा दलीप सिंघ के नाम पर शासन करने वाले अंग्रेज़ अपने आप को ख़ुद मुख़्तार समझ कर पंजाब के लोगों व स्थानीय लोगों के साथ धक्केशाही वाला व्यवहार कर रहे थे। इस समय यह बिलकुल स्वाभाविक था कि उत्तरी-पश्चिमी सरहद पर सरदार चतर सिंघ जैसी लियाकत और हैसियत वाला सरदार अंग्रेज़ विरोधी लहर का नेतृत्व अपने हाथ में ले लेता।

सरदार चतर सिंघ को अंग्रेज़ों के विरुद्ध कुछ जातीय रंज़िश भी थी। वो यह कि राजा शेर

सिंघ ने कई बार रेज़िडेंट के पास यह तजवीज़ रखी थी कि उसकी बहन (सरदार चतर सिंघ की बेटी) का विवाह महाराजा दलीप सिंघ के साथ तय कर दिया जाए, परन्तु रेज़िडेंट ने इनकार कर दिया था।

अगस्त, १८४८ ई. तक पंजाब में संकट बहुत गहरा हो गया। सरदार चतर सिंघ ने इस हालात का फ़ायदा उठा कर अंग्रेज़ रेज़िडेंट को एक बहुत लंबी चिट्ठी लिखी, जिसमें कैप्टन ऐबट को कई गलत कार्यों तथा कमियों का दोषी ठहराया। इनमें से कुछ ये थी :

१. उसने मुसलमान सिपाहियों की सहायता से कई किलों की नाकाबंदी की थी तथा पाखली के पड़ोस नारे में और आदमी भर्ती किए जा रहा है।

२. उसने २० हज़ार रुपया हज़ारे के कबाइलियों को दिया और उनके साथ इकरार किया है कि अगर वह सिक्ख फौज को तबाह करने और गवर्नर को कत्ल कर दें तो उन्हें एक से तीन वर्ष तक के लगान की छूट दे दी जाएगी।

३. ऐबट की हिदायत के अनुसार स्थानीय निवासी सारे किलों और बाहरी चौकियों के गिर्द घेरा डाल रहे हैं।

४. ऐबट कर्नल कैनोरा को गवर्नर के विरुद्ध भड़काने वाली चिट्ठियाँ लिखता रहा है।

५. हज़ारे में से ऐबट ने और सिंध सागर दोआबा में से निकल्सन ने उसे रसद और अन्य सामान भेजना बंद कर दिया है।

रेज़िडेंट ने इन दोषों की जांच-पड़ताल के लिए यह चिट्ठी जॉर्ज लारेंस को भेज दी, जो पिशावर में मुख्य असिस्टेंट रेज़िडेंट था। वह खुद हालत को सुधारने के विरुद्ध था और गवर्नर को बेइज्ज़त करने पर तुला हुआ था। इस मंतव्य को मुख्य रख कर उसने रेज़िडेंट को सलाह दी कि वह गैर-वफादारी के दोषों की जवाबदेही के लिए सरदार चतर सिंघ को लाहौर बुलाए। जॉर्ज के ख़्याल में, ''सरदार चतर सिंघ को बाग़ी फौज से, जिन पर उसके नाम पर धन-संपदा का खास प्रभाव था, अलग करने का यह सबसे अच्छा ढंग था।'' दूसरी तरफ़ उसने गवर्नर को चिट्ठी लिख कर विनती की कि वह कैप्टन ऐबट से मिल कर झगड़े वाले मामलों का फ़ैसला कर ले, मगर सरदार का गौरव और आत्मसम्मान उसे ऐसा करने से मना करता था। उसने जॉर्ज पर ज़ोर दिया कि ऐबट कट्टर कबाइलियों की अनाधिकृत फ़ौज को तुरंत तोड़ दे। इसके उत्तर में जॉर्ज लारेंस ने थोड़ी तलख़ी में आकर लिखा, ''आपको पता है कि इलाकों में अंग्रेज़ आफिसर इसलिए नियत किये जाते हैं कि वे उनके अच्छे प्रबंध में मदद करें और नाज़िम (गवर्नर) ही उनकी साथ सहयोग न करें, तो काम कैसे चल सकता है? सरदार चतर सिंघ ने यह भी विनती की थी कि उसकी सहायता के लिए कुछ दस्ते भेजे जाएँ। इस बात का मुख्य असिस्टेंट रेज़िडेंट ने बहुत

अकड़ के साथ इस प्रकार उत्तर दिया, ''आपकी इस दरख़ास्त से सम्बन्धित कि मैं यहाँ से हज़ारे को कुछ दस्ते भेजूँ, मैं यही कहना चाहता हूँ कि आप मुझे क्या समझते हो ? अंग्रेज़ आफिसर देश में अमन और फौज में ज़ब्त कायम रखने के लिए नियत किये जाते हैं। यह कितनी फ़िज़ूल बात है कि मैं यहाँ से फ़ौज भेजूँ, ताकि वे वह वहां जाकर बागियों के साथ मिल जाए।'' जब सरदार ने यह आपत्ति ज़ाहिर की कि ऐबट के लिए फ़ौज के नये दस्ते भर्ती करना अयोग्य है तो जॉर्ज लारेंस ने बड़ा अनोखा उत्तर दिया कि ''उसने जितनी आसानी से यह भर्ती की है, उतनी आसानी से उन्हें बरख़ास्त भी कर सकता है।

इन बातों से स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि किसी भी स्तर पर अंग्रेज़ आफिसर दलील की बात सुनने को तैयार नहीं थे। लगता था कि अंग्रेज़ अधिकारियों ने खूब सोच-समझ कर यह मंसूबा बनाया था कि जहाँ भी लाहौर दरबार के गवर्नर या अन्य आफिसर सुयोग्य एवं आत्मसम्मान वाले प्रबंधकों के तौर पर उच्च कोटि की योग्यता का प्रमाण दें, वहीं उन्हें नीचा दिखाने और उनका अपमान करने का यत्न किया जाए। सरदार चतर सिंघ को ऐसी उलझन में फंसाना किसी तरह भी योग्य और न्यायपूर्ण नहीं था, परन्तु निकल्सन ने भी, स्पष्ट रूप से गवर्नर और उसके अंग्रेज़ असिस्टेंट के बीच मध्यस्थ का काम कर रहा था, सरदार चतर सिंघ को धमकाने का यत्न किया। उसे चेतावनी देते हुए उसने लिखा, ''अगर वह तुरंत अधीनता स्वीकार कर ले और फौज को अपने-अपने ठिकानों पर वापस भेज दे तो मैं इस बात का जिम्मा लेता हूं कि उसकी जान और इज्जत बच जाएगी, लेकिन मैं उसकी निज़ामत (गवर्नरी) और जागीर की कोई ज़िम्मेदारी नहीं लेता। वास्तव में मैंने उसे पहले ही लिख दिया है कि उसे इन चीजों से बचने की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। इसके अलावा उसे पंजाब के किसी भी हिस्से में, जहाँ हम उसे रखना चाहें, रहना पड़ेगा और अगर यह योग्य समझा गया तो उसे एक या दो वर्ष के लिए तीर्थ-यात्रा पर पंजाब से बाहर जाना पड़ेगा।

जब सरदार चतर सिंघ वैधानिक साधनों के साथ अंग्रेज़ रेज़िडेंट और उसके मातहतों पर यह प्रभाव न डाल सका कि उनका चंचल व्यवहार भरोवाल के अहदनामे के विपरीत है तो उसने महाराजा दलीप सिंघ और लाहौर दरबार के साथ न्याय कराने का मात्र एक ही शेष रहता साधन—हथियारबंद बग़ावत करने का फ़ैसला कर लिया। उसने पिशावर, अटक, बंनूं तथा अन्य स्थानों की सिक्ख रेज़िमेंटों से अपील की कि वे देश-भक्त बन कर उठ खड़े हों। पिशावर की सिक्ख फौज ने उसकी माँग पर तत्काल फूल चढ़ाते हुए उसे लिखित इकरारनामा भेजा, जिसमें गवर्नर और उसके पवित्र उद्देश्य के साथ वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा की। जल्दी ही बाद में बंनूं की रेज़िमेंटों ने

भी उसके साथ वफ़ादारी का एलान कर दिया। वास्तव में लाहौर दरबार के सिपाही चिरकाल से इस मौके का इन्तज़ार कर रहे थे। उन्हें सतलुज के किनारे वाली असफलता भूली नहीं थी, बल्कि उन्हें अपनी असफलता पर रह-रह कर गुस्सा आ रहा था। इन सिपाहियों में यह आम विश्वास फैला हुआ था कि पंजाब ढाई वर्ष बाद पलट कर अपनी छीनी हुई स्वतंत्रता पुनः प्राप्त कर लेगा। महारानी जिंदां के देश-निकाले से अंग्रेज़ों के विरुद्ध उनकी दुश्मनी और भी बढ़ गई थी।

सरदार चतर सिंघ इन ताज़ी घटनाओं के बारे में अपने पुत्रों के साथ भी चिट्ठी-पत्र कर रहा था। जब उसने देखा कि राजा शेर सिंघ राष्ट्रीय मनोरथ की पुष्टि करने में कुछ लापरवाही कर रहा है तो उसने उसे फटकार लगाते हुए लिखा, ''अंग्रेज़ों के साथ हुए समझौते से तेरा कोई मतलब नहीं है। अगर तू मेरी जान और अपने देश के धर्म को बचाना चाहता है तो तुझे मेरे कहने पर चलना चाहिए।'' इसके शीघ्र पश्चात उसने सरदार सूरत सिंघ मजीठीए को राजा के पास भेजा और उस पर ज़ोर दिया कि वह बिना और लापरवाही किए अंग्रेज़ों के विरुद्ध बग़ावत कर दे। मजीठीए सरदार ने राजा शेर सिंघ के कैंप में पहुँचते ही एलान कर दिया कि ''फिरंगियों को देश में से निकालने का यही अवसर है और जो सरदार इस समय इस लहर की विरोधता करेगा, उसे ख़ालसे का दुश्मन समझा जाएगा।

राजा शेर सिंघ ने बड़े उत्साह के साथ इस संदेश पर फूल चढ़ाए और वह अपनी पांच हज़ार फौज सहित १४ सितंबर, १८४८ ई. को दीवान मूल राज के साथ मिल गया। अंग्रेज़-विरोधी कैंप में जाने से तुरंत पहले राजा शेर सिंघ ने अपने छोटे भाई गुलाब सिंघ को लाहौर में घटिया मनोभाव की एक चिट्ठी लिखी, ''सिंघ साहिब (सरदार चतर सिंघ) ने मुझे कई बार लिखा कि कैप्टन ऐबट ने उसे बहुत दुख एवं कष्ट दिया है और उसने खालसा फ़ौज को विखंडित करने व तबाह करने का भी पूरा यत्न किया है, इसलिए मैंने सिंघ साहिब से मिलने और अपने आप को अपने धर्म को अर्पित करने का फ़ैसला कर लिया है। अगर तेरे दिल में सिंघ साहिब की हिदायतों या मेरी नसीहत का कोई सम्मान है तो इस चिट्ठी के मिलते ही सिंघ साहिब के साथ मिलने के लिए तैयार हो जा या जम्मू अथवा किसी अन्य उचित स्थान पर चला जा। अगर तू मेरी नसीहत पर ध्यान नहीं देगा, तो जैसे तेरी मर्ज़ी है कर, मगर यह याद रखना कि पुत्रों का यह फर्ज बनता है कि अपने पिता का हुक्म मानें, क्योंकि जीवन पल भर का है और चिट्ठी का इन्तज़ार मत करना। हमारे बीच ईश्वर जामिन है। अगर हम जिंदा रहे तो मिलेंगे, नहीं तो जो वाहिगुरु का हुक्म! मैं प्रथम आश्विन (१४ सितंबर, १८४८ ई.) को मुलतान के किले में चला जाऊँगा।''

अटारी वाले सरदारों के पलटने से अंग्रेज़-

विरोधी बग़ावत सारे पंजाब में फैल गई। इस बात की रिपोर्ट देते हुए मिस्टर करी ने अपनी सरकार को लिखा, ''सरदार चतर सिंघ की बग़ावत ने इस समय तक समर्थक कम बनाए हैं या ज्यादा, लेकिन इस बात में कोई शक नहीं कि सारे देश में राजनीतिक अशांति इतनी आम है और उसने इतने साधन अपनाए हैं कि इसने जल्दी ही आम बग़ावत का रूप धारण कर लेना है। केवल सरदार चतर सिंघ को हज़ारे में दबा लेना अमन स्थापित करने में ज्यादा सहायक नहीं होगा।

इस आम बग़ावत का परिणाम यह निकला कि जिन कबाइलियों ने पहले जेम्ज़ ऐबट को समर्थन का वचन दिया था, उन्होंने भी ज्यादातर स्थान पर उसे छोड़ दिया। ऐबट ने अपने बड़े आफिसरों को इस बात की सूचना देते हुए लिखा, ''तीन पड़ोसी किलों की फ़ौज ने मेरी अधीनता स्वीकरा कर ली थी और कुछ पेशगी तनख़्वाह भी वसूल कर ली थी। इसके बिना उन्होंने छच्छ के कर्मचारी के नाम और दो महीने की तनख़्वाह के परवाने ले लिए थे। उन्हें को सभी पिछले बकाए अदा करने का वचन दिया गया था। शर्त यह थी कि वे सरदार चतर सिंघ के पास नौकरी नहीं करेंगे। परन्तु ये लोग हुक्म मानने का पक्का वचन देकर भी सामूहिक रूप से दुश्मन के साथ जा मिले हैं। इस बात से मेरे कैंप में बहुत आक्रोश फैल गया है। यह भी साबित हो गया है कि सिरवान की किलेबंद फ़ौज भी सरदार चतर सिंघ के साथ चिट्ठी-पत्र कर रही है।

दोस्त मुहम्मद खान के साथ गठजोड़ : सरदार चतर सिंघ ने सबसे अधिक समझदार चाल यह चली कि काबुल के शासक अमीर दोस्त मुहम्मद खान के साथ गठजोड़ कर अंग्रेज़-विरोधी मोर्चे को और मजबूत कर लिया। यह वास्तव में मुसलमानों को सिक्खों के विरुद्ध खड़े करने की अंग्रेज़ी नीति के विरुद्ध एक पलटवार था। इस मंतव्य के लिए उसने सुलतान मुहम्मद खान के माध्यम से अफगानिस्तान के हाकिम के साथ एक मुलाकात का प्रबंध किया। अच्छे भाग्य से इसका परिणाम यह निकला कि दोस्त मुहम्मद खान ने सरदार चतर सिंघ के साथ मिलना स्वीकार कर लिया और सरदार चतर सिंघ ने इकरार किया कि हमारे दुश्मन अंग्रेज़ को पंजाब में से निकालने के बाद पिशावर अफगानों के हवाले कर दिया जाएगा। फ़ैसला हुआ कि अमीर का पुत्र अकरम खान अपनी फ़ौज सहित सरदार चतर सिंघ के कैंप में पहुँच जाएगा।

इस प्रकार अपनी स्थिति को दृढ़ कर सरदार ने ऐबट की तरफ से चली गई चालों को असफल करने के लिए पलटवार शुरू किये। दुर्भाग्य से पहली कार्यवाही अपने ही तोपखाने के एक आफिसर कर्नल कैनोरा के विरुद्ध करनी पड़ी। यह आदमी ऐबट का ख़ुफ़िया समर्थक था। जब ऐबट ने हरीपुर में मुसलमान सिपाहियों की मदद से गवर्नर की कोठी को घेरा डाला और उन

पर ज़ोर दिया कि अंग्रेज़ों के विरोधी प्रत्येक सिक्ख का खुरा-खोज मिटा दो तो कर्नल कैनोरा ने सिक्ख फ़ौज के साथ तालमेल करने से इनकार कर दिया। उसके सुपुर्द दो तोपें थीं, मगर उसने न केवल शहर से बाहर निकलने से इनकार कर दिया, बल्कि अपने ही आदमियों पर गोलाबारी करने के लिए दोनों तोपें भी तैनात कर दीं। प्राकृतिक रूप से गवर्नर अपने ही एक अधीन आफिसर के बागियाना व्यवहार को बर्दाश्त नहीं कर सकता था, इसलिए उसने उससे तोपें छीनने के लिए सिक्ख प्यादा फ़ौज की दो कंपनियाँ भेज दीं। इस पर कर्नल कैनोरा ने पहले तो अपने ही तोपची को, जिसने पैदल फ़ौज पर गोली चलाने से इनकार कर दिया था, गोली मार कर उड़ा दिया और इसके बाद उसने एक तोप को खुद आग लगा दी। अच्छे भाग्य, तोप न चली और बचाव हो गया। इसके बाद हुई झड़प में कर्नल कैनोरा और सिक्ख दस्ते के दो आफिसर मारे गए। जेम्ज़ ऐबट ने इसे बेदर्दी भरा कत्ल कह कर सरदार चतर सिंघ से माँग की कि वह कैनोरा के कातिलों को उसके हवाले कर दे ताकि उन पर मुकद्दमा चला कर उन्हें सजा दी जाऐ।

सरदार चतर सिंघ ने इस दोष का खंडन करते हुए ऐबट को उत्तर दिया कि "कैनोरा अपने तोपची सहित बग़ावत करता हुआ मारा गया है।" उसने खुल्लम-खुला उन सिपाहियों को इनाम दिए जिन्होंने उसका हुक्म मान कर और अपनी जान को जोखिम में डाल कर बाग़ी कर्नल से तोपें छीनी थीं। फिर उसने ऐबट के विरुद्ध, जिसने गंदगढ़ पहाड़ियों के पैरों में (जिसे 'तख़्ते हज़ारा' भी कहते हैं) मोर्चे बना लिए थे, चढ़ाई कर दी। सरदार के अच्छे भाग्य से ऐबट की भर्ती की हुई शूरवीर और वफ़ादार आबादी की स्वाभिमानी कौम' सिक्खों की बाकायदा फ़ौज के सामने एक दिन भी न टिक सकी और अपना गोला-बारूद ख़त्म कर हरण हो गई।

सरदार चतर सिंघ का अगला कार्यक्रम राजा शेर सिंघ की फौज के साथ मिलना था, जो इस समय उत्तरी-पश्चिमी दिशा की तरफ कूच कर रही थी। अंग्रेज़ अधिकारियों ने पिता-पुत्र की फौज के मिलाप को रोकने का बहुत यत्न किया, परन्तु वे सफल न हो सके। सरदार चतर सिंघ ने पिशावर एवं अटक पर कब्ज़ा कर लिया और जॉर्ज लारेंस तथा लेफ्टिनेंट बॉबी को कैदी बना लिया। दूसरी तरफ़ राजा शेर सिंघ ने अंग्रेज़ों को रामनगर में २२ नवंबर, १८४८ ई. को और चेलियांवाला में १३ जनवरी, १८४९ ई. को करारी हार दी। इन लड़ाइयों में बाग़ी सिक्ख फौज ने इतना प्रभाव बनाया कि इंग्लैंड की पार्लियामेंट में तूफ़ान उठ खड़ा हुआ और परिणामस्वरूप जनरल गफ की जगह सर चार्ल्स नेपियर को कमांडर-इन-चीफ नियुक्त कर भेजा गया।

राजा शेर सिंघ ने अपने पिता की फ़ौज से मिलने की जल्दी में एक बहुत भारी भूल यह की

कि अंग्रेज़ों को इतना समय दे दिया कि उन्होंने मुलतान पर कब्ज़ा कर और उधर से फुर्सत पाकर अपनी सारी फ़ौज शेर सिंघ के मुकाबले में झोंक दी। अगर कभी राजा शेर सिंघ चेलियांवाला की ख़ूनी लड़ाई के बाद अंग्रेज़ों को संभलने का मौका न देता और उन पर २१ जनवरी, १८४९ ई. अर्थात् मुलतान की हार से पहले-पहले हमला कर देता तो बिलकुल संभव था कि वह जीत जाता। जब पिता-पुत्र का रसूल में मिलन हुआ तो उनकी मिलीजुली फौज सहित अकरम खान की १० हजार गिनती वाली भारी फ़ौज के अंग्रेज़ों की फौज की अपेक्षा, जो अब लगभग सभी इकट्ठा हो गई थीं, बहुत कम थे। इसका परिणाम यह हुआ कि २१ फरवरी, १८४९ ई. को तूं गुजरात की प्रसिद्ध लड़ाई में सिक्ख-अफगान मिश्रित फौज की करारी हार हुई।

गिरफ्तारी और कैद : गुजरात की तबाही के बाद सिक्ख नेता रावलपिंडी भाग गए, जहाँ इस मुहिम के भविष्य का फ़ैसला करने के लिए उच्च स्तर पर एक कान्फ्रेंस हुई। यह देख कर कि अंग्रेज़ों की फौज तेज़ी से उनका पीछा कर रही है, उन्होंने हार मानने का फ़ैसला कर लिया। १२ मार्च, १८४९ ई. को उन्होंने माणकिआला गाँव में रस्मी तौर पर हथियार डाल दिए। सजल नेत्रों और उदास चेहरे के साथ चुपचाप एक कतार में चलते हुए सिक्ख सिपाही आए और बारी-बारी से अपने हथियार दुश्मन के हवाले करते गए।

सरदार चतर सिंघ और उसके पुत्रों की पराजय के बाद अंग्रेज़ सरकार ने पंजाब को अपने राज में मिला लिया। गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी का विचार था कि ताजा कष्ट और मुश्किलों के कारण तथा ताकतों व जागीर छिन जाने के कारण इन बागियों का मन प्रभावहीन हो गया है, इसलिए उसने फ़ैसला किया कि इन्हें निम्नलिखित बंदिशों के अधीन अपने गाँव अटारी की हद के अंदर नज़रबंद कर दिया जाए :

१. वे लिखित आज्ञा के बिना अटारी से डेढ़ कोस से ज्यादा दूर नहीं जाएंगे।

२. वे कोई हथियार नहीं रखेंगे।

३. वे पिछली लड़ाइयों से संबंधित किसी आदमी के साथ पत्र-व्यवहार नहीं करेंगे।

अंग्रेज़ अधिकारियों को शीघ्र ही यह देख कर बहुत घबराहट हुई कि इन बंदिशों के बावजूद पंजाब के सभी देश-भक्त नेतृत्व के लिए अटारी वालों की तरफ देखते थे और अटारी एक बार फिर पंजाब में तूफ़ान का केंद्र बनता जा रहा था। ब्राह्मण और सिक्ख संदेशवाहकों के माध्यम से सभी अंग्रेज़-विरोधी ताकतों के बीच बाकायदा तालमेल रखा जा रहा था। सर हेनरी लारेंस ने अपनी १२ सितंबर की नीम-सरकारी चिट्ठी में लिखा, ''यह सबको पता है कि ये ब्राह्मण वो श्रेणी हैं, जिनके माध्यम से राजनीतिक जोड़-तोड़ होती रहती है। राजा शेर सिंघ जानता है कि कितनी बार रानी (महारानी जिंद कौर) ने इनका

सहारा लिया और कितनी बार उसे इस काम से मना किया गया।'' लार्ड डलहौजी ने इस बात के साथ पूरी तरह से सहमत होते हुए लिखा, ''अटारी ख़ानदान सचमच उन व्यक्तियों में से ज्यादातर के साथ लगातार पत्र-व्यवहार कर रहा है, जो पिछली लड़ाई में शामिल थे। वे संदेश ले-दे रहे हैं।'' इसलिए फ़ैसला यह हुआ कि जवाबी कार्यवाही के तौर पर सरदार चतर सिंघ और अन्य सभी तथाकथित बाग़ी सरदारों को गिरफ़्तार कर पंजाब से देश-निकाला दे दिया जाए।

उनकी गिरफ़्तारी के लिए १ नवंबर, १८४९ ई. की तारीख़ नियत की गई। गवर्नर जनरल की हिदायत यह थी कि यह गिरफ़्तारी ऐसे ढंग से हो कि किसी को फ़साद करने का मौका न मिले। अटारी वाले ख़ानदान की गिरफ़्तारी के लिए मेजर लारेंस, आर. मिंटगुमरी, मेजर एडवर्ड और हडसन बाकायदा घुड़सवारों के एक दस्ते एवं पठान सवारों को साथ लेकर रात के वक्त एक बजे लाहौर से चल पड़े। सूर्योदय से पहले गाँव में पहुँच कर उन्होंने झटपट गाँव को घेरा डाल लिया और अचानक गहरी नींद सोए नेताओं पर टूट पड़े। सरदार चतर सिंघ, उसके पुत्र सरदार शेर सिंघ, सरदार अवतार सिंघ, सरदार तेज सिंघ और उसके भतीजे सरदार नाहर सिंघ एवं सरदार बिशन सिंघ सब गिरफ़्तार कर ११ बजे सुबह तक लाहौर किले में पहुँचा दिए गए। गिरफ़्तार हुए सरदारों की जायदाद ज़ब्त करने और उनके किले को तोड़ने के लिए हडसन को अटारी ही रखा गया।

लाहौर से अटारी वाले सरदारों को अन्य गदरी मुखियों के साथ इलाहाबाद किले में भेज दिया गया। इलाहाबाद में उन पर बड़ा सख्त पहरा रखा गया। यहाँ तक कि गर्मियों के मौसम में भी उनको बाहर सोने की आज्ञा नहीं थी।

इस सारी निगरानी के बावजूद अटारी वाले सरदारों ने एक बार फिर महारानी जिंद कौर जो उस समय बनारस में कैद थी, के साथ तालमेल पैदा कर लिया। इसके परिणामस्वरूप सरदार चतर सिंघ और उसके पुत्रों को कलकत्ता भेज दिया गया, जहाँ उन्हें किले में कैद कर और भी ज्यादा पाबंदियाँ लगा दी गईं। वृद्ध सरदार, जिसने इतने वर्ष सहर्ष बंदी-जीवन की तकलीफें बरदाश्त कीं और कठिनाई झेली थीं, अंत में ढेरी हो गया और अक्तूबर १८५५ ई. में वह सख़्त पेचिश से बीमार हो गया। यह बीमारी अंतिम काल बनकर समाप्त हुई और २७ दिसंबर, १८५५ ई. को उसकी जीवन-यात्रा समाप्त हो गई।

इस प्रकार उस शूरवीर योद्धा के शानदार जीवन का अंत हुआ, जिसने अपनी मातृ- भूमि की स्वतंत्रता के लिए अपनी जान-माल और इज्जत की बाज़ी लगा दी थी, जिसने अंग्रेज़ों की 'बांटों और राज करो' की नीति की उचित जांच-पड़ताल कर ली थी और जिसके बिना दूसरा अंग्रेज़-सिक्ख युद्ध न छिड़ सकता।

फिरोज़दीन शर्फ की कविता में साका श्री ननकाणा साहिब सम्बंधी वृत्तांत

*–डॉ. धरम सिंघ**

'पंजाबी बुलबुल' के लक़ब से जाने जाते, ''सोहणे देश विचों देश पंजाब नीं सईओ'' गीत के रचयिता और ३० से अधिक पुस्तकों के कर्त्ता बाबू फिरोज़दीन शर्फ की पंजाबी कविता और सभ्याचार को महान देन है। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में हुआ यह कवि, पंजाबी कवि-दरबारों की उपज है और दरबारी कवियों की यह ख़ूबी होती है कि वे समकालीन हालात के साथ जुड़े हुए होते हैं। इसी लिए हम देखते हैं कि इतिहास की हर धुनि या प्रतिधुनि उनकी कविता में से सुनी जा सकती है। फिरोज़दीन शर्फ का कार्य-काल (१८९८-१९५४ ई.) पंजाब के इतिहास का वह दौर है जो न केवल घटनाओं से भरपूर है बल्कि काव्य-रचना के पक्ष से भी बड़ा ज़रखेज़ है। शर्फ की छोटी-बड़ी काव्य रचनाओं की संख्या चाहे सैकड़ों में है, परन्तु आजकल यह शर्फ रचनावली (दो भाग) में संकलित हुई मिलती है। समकालीन राजनीति, इतिहास और सभ्याचार सरोकार उसकी कविता के मुख्य सरोकार हैं।

बीसवीं सदी के अर्द्ध के पंजाब में घटनाएँ बहुत तेज़ी से घटित हो रही थीं। बरतानिया साम्राज्य से निजात पाने के लिए शुरू किया गया संघर्ष पूरे यौवन पर था और इसमें प्रतिदिन नयी लहरें पैदा हो रही थीं। फिरोज़दीन शर्फ का इन घटनाओं से निर्लिप्त रहना कठिन था। जब उसने अपनी काव्य-यात्रा आरंभ की तो उस समय जो सबसे अहम घटना घटी, वह जलियां वाला बाग़ का साका था। शर्फ की राजनीतिक चेतना का शिखर उसकी पुस्तक 'दुक्खां दे कीरने' है, जिसे अंग्रेज़ सरकार ने ज़ब्त कर लिया और उसे कैद कर दिया। पुस्तक की जब्ती और कैद शर्फ की काव्य-यात्रा में एक बड़ा मोड़ साबित हुई। उसकी इस कुर्बानी को एक मुस्लिम कवि की सिक्ख राज्य के लिए की गई कुर्बानी माना गया और इसका परिणाम यह हुआ कि किसी भी कवि दरबार, विशेषतया सिक्ख धार्मिक कवि दरबार में उसकी शमूलियत होना आवश्यक समझा जाता था। शर्फ को सिक्ख समाज की तरफ से मिले आदर-मान ने उसे और भी उत्साहित किया और प्रेरित भी। इसी लिए हम देखते हैं

**पूर्व प्रोफेसर, पंजाबी अध्ययन स्कूल, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, श्री अमृतसर—१४३००५, फोन : ९८८८९-३९८०८*

कि 'शर्फ रचनावली' (भाग पहला) की कवितायों का एक वर्ग ही सिक्खी का है, जिसमें गुरु साहिबान और सिक्ख शहीदों का यश-गायन है। शर्फ कवि दरबारों की शान था। उसे न केवल प्रत्येक सिक्ख कवि दरबार में बुलाया ही जाता था, बल्कि जब आम लोगों को यह पता चल जाता कि कवि दरबार में शर्फ भी आ रहा है तो वे हर्षोल्लास से वहाँ पहुँचते। शर्फ के बिना कवि दरबार अधूरा होता था।

शर्फ के समकाल में ही ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान को भ्रष्ट और कुकर्मी महंतों से आज़ाद कराने के लिए 'अकाली लहर' या 'गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर' आरंभ हुई। इस लहर का भाव तो चाहे धार्मिक था, परन्तु वास्तव में अंग्रेज़ों का विरोध इसका बुनियादी मकसद था, क्योंकि महंतों को अपरोक्ष रूप से बर्तानवी हाकिमों का समर्थन हासिल था। 'गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर' का आरंभ तो चाहे सियालकोट (पाकिस्तान) में श्री गुरु नानक देव जी की याद में बने गुरुद्वारा बाबे दी बेर को आज़ाद कराने से हुआ, परन्तु गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के साके ने इसे और प्रचंड कर दिया। श्री ननकाणा साहिब के मुख्य गुरुद्वारा साहिब जन्म-स्थान श्री गुरु नानक देव जी पर महंत नारायण दास का कब्ज़ा था। इस महंत के कुकर्मों और व्यभिचारी जीवन की बातें हर सिक्ख की जुबान पर थीं। जब उसे इस लहर की भनक लगी तो उसका अंत:करण काँप उठा। वो बड़ा शातिर दिमाग़ था। इस केंद्रीय गुरुद्वारा साहिब के नाम हज़ारों एकड़ ज़मीन थी, जिससे अच्छी आमदन प्राप्त होती थी। महंत इस आमदन पर शाही ठाठ-बाठ का लुत्फ उठा रहा था। यदि यह गुरुद्वारा साहिब उसके कब्ज़े में नहीं रहता, तो उसे अच्छी-खासी आमदन हाथ से जाने का डर था। सिक्ख समाज में श्री ननकाणा साहिब की हो रही बेअदबी के कारण बेहद आक्रोश था। वह जल्दी से जल्दी इसे महंत के कब्ज़े से आज़ाद कराना चाहता था। महंत अपनी कुटिल चालों के कारण तथा सिक्ख धार्मिक मर्यादा के ख़िलाफ़ कार्यवाहियां कर अति घिनौना बन चुका था।

महंत ने श्री ननकाणा साहिब के गुरुद्वारा साहिब जन्म-स्थान को किले का रूप देकर भाड़े के पठानों तथा अन्य असामाजिक तत्वों को हथियारबंद कर कत्ल-ओ-गारत का सामान पहले ही जमा कर रखा था। २१ फरवरी, १९२१ ई. को जत्थेदार दलीप सिंघ धारोवाली के नेतृत्व में सिंघों का जत्था गुरुद्वारा जन्म-स्थान में दाख़िल हुआ। पहले से ही तैयार महंत के गुंडों ने गोलियों की बौछार कर दी। बहुत-से सिंघ गोलियों का

शिकार हो गए और जो अभी सिसक रहे थे उन्हें तेल डाल कर जलाया गया। जत्थेदार दलीप सिंघ को गुरुद्वारा साहिब की हदूद के अंदर आग लगा भस्म कर दिया गया। इस साके ने जलियां वाला बाग़ के साके की याद ताज़ा कर दी। श्री ननकाणा साहिब के साके ने पूरे पंजाब को झंझोड़ कर रख दिया और हर तरफ़ आक्रोश एवं क्रोध का एक तूफ़ान खड़ा हो गया। इसका प्रभाव कोमल हृदय कवि फिरोज़दीन शर्फ की कविता पर भी पड़ा।

श्री ननकाणा साहिब के साके से सम्बन्धित फिरोज़दीन शर्फ की कई कवितायें मिलती हैं, जिनमें से कुछ एक के नाम हैं— शहीद, ननकाणे दे शहीद, शहीदां दी दास्तान, सिक्ख इत्तफ़ाक आदि। 'शहीदां दी दास्तान' शर्फ की एक लम्बी कविता है। इस कविता का एक-एक शब्द दर्द से भरा है। यह कविता लिखते समय शर्फ कैसे महसूस कर रहा था, इसका कुछ हाल देखें :

दासतान शहीदां रंगलिआं दी,
जदों लिखण लई मेरा खिआल आइआ।
सागर विच जिउं आवे जवारभाटा,
खा के इस तरां जोश उबाल तुरिआ।

महंत नारायण दास की तैयारी के सम्मुख निहत्थे सिंघों पर कहर बरपाने का विवरण कुछ इस प्रकार है :

लै के सिमर हरामीआं सामीआं नूं,
मारन जिउं रसूल दी आल तुरिआ।
उसे तरां गुरू नानक दे सेवकाँ नूं
कतल करन नरैणा चंडाल तुरिआ।
मारे जंदरे अंदरे सिंघ मारे,
बाशक धौल दे दिलों भुचाल तुरिआ।
धरती जलिआँवाले दी कंब उठी,
धरूह भगत वी हो के बेहाल तुरिआ।
धारां लहू दीआं इस तरां चल्लीआं सन,
आवे खाल 'चों जिवें निकल तुरिआ।

शर्फ की काव्य प्रतिभा का एक विशेष गुण यह है कि उसे नामवर सिक्ख शहीदों के कारनामे और धर्म के लिए की गई कुर्बानियां बीते कल की भांति याद थीं। वो श्री ननकाणा साहिब के शहीदों को उनके साथ मेल कर इनमें मकसद और शहादत की एक सांझ ढूँढने की कोशिश करता है। भाई सुबेग सिंघ जी, भाई तारू सिंघ जी, भाई मनी सिंघ जी और बाबा दीप सिंघ जी आदि शहीद उसे श्री ननकाणा साहिब के शहीदों के बड़े-बूढ़े ही प्रतीत होते हैं :

छैल सिंघ कोई वाँग सुबेग सिंघ दे,
तोड़ जग दे सारे जंजाल तुरिआ।
तारू सिंघ वांगूं मंगण दान कोई,
पिआला खोपड़ी लाह कंगाल तुरिआ।
मनी सिंघ वांगूं हो के कई टुकड़े,
अंम्रित छकण दे कौल नूं पाल तुरिआ।
कोई दीप सिंघ धरम दे दीप उत्ते,

आपा वाँग पतंग दे जाल तुरिआ।
लछमण सिंघ किहा, मैं वी चलना हाँ,
जिवें लछमण सी राम दे नाल तुरिआ।

श्री ननकाणा साहिब के शहीद फिरोज़दीन शर्फ की इस साके से संबंधित लिखी गई एक और कविता है, जिसमें वह महंत नारायण दास और उसके भाड़े के गुंडों द्वारा ढाए कहर के बारे में अलग अंदाज़ में बात करता हुआ कहता है :

बाहरों मार पापी ताले।
अंदर पा पा तेल जाले।
सते अंबर कंबे नाले।
सभे धरताँ डोलीआँ।
मन दीआँ मन मीआँ।
नरम ते मलूक देहीआँ।
हाए हाए फुल्लां जेहीआँ।
भट्ठे पा के रोलीआँ।
शरधा वाले तकड़ लाए।
धरम वाले वट्टे पाए।
जान वाली जिनस लिआए।
धारना सन तोलीआँ।

शर्फ कवि दरबारों की उपज था और उसने अपनी सारी ज़िंदगी कवि दरबारों के लेखे लगा दी। जिस कवि दरबार में शर्फ के पहुँचने की सूचना मिलती, सभी पंजाबी उसे सुनने के लिए वहां पहुँच जाते। गुरुपर्वों, शहीदों की वर्षगांठ, सिक्ख कान्फ्रेंसों और अन्य समागमों में इनामी कवि दरबार भी करवाए जाते। श्री ननकाणा साहिब के साके की याद में बाद में करवाए गए एक कवि दरबार में उसने अपनी एक कविता पढ़ी, जिसमें वह शहीदों को याद करता हुआ, उनकी कुर्बानियों की प्रशंसा करता है :

हजरत मूसा ननकाणे विच आ वेखीं,
सोल्हे नूर दे निकलदे 'नार विच्चों।
जिगर कालजे फूकदी घूकदी ए,
निकली कूक शहीद दी तार विच्चों।
इह अज्ज उन्हां दी बरसी 'ते फुल्ल बरसण,
जिहड़े पंथ उत्तों जानाँ वार गए ने।
नैं लंघ गए आप शहीदीआँ दी।
सानूं कंढे 'ते शर्फ खलार गए ने।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्री ननकाणा साहिब में घटित कत्ल-ए-आम की त्रासदी पंजाब के राजनीतिक इतिहास ही नहीं, साहित्यक इतिहास में भी एक महत्वपूर्ण घटना है। शर्फ सहित अन्य कई कवियों ने इस त्रासदी के बारे में कई कवितायें लिखी हैं, परन्तु इन कविताओं में रुदन या विलाप नहीं, बल्कि शहीदों के प्रति अकीदत व मुहब्बत झलकती दिखाई देती है। अत्याचारी और ज़ालिम के प्रति घृणा, मगर मज़लूम और पीड़ित के लिए प्यार व हमदर्दी पंजाबी कविता का विशेष गुण है।

२७ फरवरी, १९२६ ई. को फांसी लगा कर शहीद किये गए बब्बरों को याद करते हुए

बब्बर अकाली लहर और इसकी पृष्टभूमि

*- स. दीदार सिंघ**

हर मिट्टी दी आपणी खसलत,
हर मिट्टी कुट्टियां नहीं भुरदी।
हर फट्टड़ मत्था नहीं झुकदा,
बंन्ह लाइआं हर छल्ल नहीं रुकदी।

समय पोरस का हो या श्री गुरु नानक देव जी का, सात दरियाओं या पाँच पानियों की धरती के कारण विख्यात इस इलाके ने पूरे भारत को, विशेष कर इसके उत्तरी हिस्से को इस कद्र अपनी लपेट में ले लेना है, कि किसी की याद में भी नहीं होगा।

मानव हालात की उत्पत्ति है। फिर सभी लोग इंकलाबी क्यों नहीं बन जाते? जब्र-ज़ुल्म चारों तरफ़ पसरा हो। बाबरी भीड़ देश का कोना-कोना अपने जब्र का निशाना बना रही हो। सभी श्री गुरु नानक देव जी की तरह अत्याचारी बाबर को *"पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ"* कहकर क्यों नहीं पुकारते? ..... हां! कुछ लोग होते हैं ऐसे, जो समय की आँख में आँख डाल कर बात करने का सामर्थ्य रखते हैं। काबिज़ हाकिमों द्वारा निर्धारित मार्गों को रद्द कर, नये मार्ग के सृजक बनते हैं। इन कठिन मार्गों के पथिक बनना हर एक के वश में नहीं होता।

किसी-किसी का नसीब होता है, इतिहास की बुनियाद की ईंट बनना। इतिहास की सृजना करने वाले यही युगपुरुष होते हैं जो नयी कौमों के जन्मदाता बनते हैं। इस निर्मित ख़ूबसूरत इमारत की ममटी के मुकुट पर सुनहरा ताज बन चमकने का उन्होंने मूल्य अदा किया होता है। जिनके पास अपने पुरखों की ऐसी अमीर विरासत होती है, वे कभी भी, कुछ भी कर गुज़रने के योग्य होते हैं। उनकी ही संयमी, मेहनती ज़िंदगियों को आने वाले समय में सदा नत्मस्तक होकर, अपने फर्जों से मुक्त हुए महसूस कर, खुशियों का प्रकटावा करते हैं।

कुछ वे भी होते हैं जो अपने पुरखों द्वारा बहाए ख़ून से सृजित की इस अमीर विरासत की पैरवी करते हुए आगे बढ़ते हैं। वे इतिहास की धूल में गुम नहीं होते, बल्कि उस धुंध-ग़ुब्बार में से रौशन मीनार की भांति टिमटिमाते सितारे बनकर निकलते हैं। इस जब्र-ज़ुल्म की धुंध में लिपटी अवाम को आगे बढ़ने, ख़ूबसूरत वर्तमान बनाने और भविष्य की तरफ कदम बढ़ाने के लिए इशारे कर जाते हैं। ऐसे ही योद्धा थे वे गुरु-काल के बाद, सिक्ख-काल के समय बाबा बंदा सिंघ बहादुर के असली वारिस। ख़ूबसूरत प्राकृतिक व्यवहार के अनुसार जीने-

**बी-५/६१४, कविता भवन, चंडीगढ़ रोड, नवांशहर (शहीद भगत सिंघ नगर)—१४४५१४, फोन : ९८१४९-२२५५९*

मरने की बात करने वाले अपनी बात कहने का मूल्य अदा करते हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी शहादत देकर, घर-घाट गंवा कर, बेघरों के लिए घर का निर्माण कर जाते हैं। ऐसे लोग अपने पुरखों की गौरवमयी रीति को आगे बढ़ाते हैं। ऐसे लोग ही होते हैं, जो घोड़ों की पीठ को अपना घर-घाट, अपना नसीब मान लेते हैं, हर नये चढ़े दिन को खुशआमदीद कहते हुए आगे बढ़ते हैं। एक-एक दिन में ही हज़ारों की संख्या में कत्लगाहों की भेंट चढ़ कर, सिर कलम करवा कर भी ये लोग कभी झुकते नहीं।

लुटेरी जमातें अपने नाम बदल कर आती रहती हैं, परन्तु प्राकृतिक व्यवहार के आशिक कभी समझौता नहीं करते। मुग़ल गए, गोरे आए। ये बहादुर कभी कूके, कभी सिंघ सभीए बनते हैं। विदेशी धरतियों के सुख-आनंद को ठोकर मार, अपनी मिट्टी का कर्ज़ उतारने, अपने पुरखों की अमीर विरासत का गौरव बनने के लिए गदरी बाबाओं के रूप में लंदन की वारें गाते हुए, शहीदियों के गाने बाँधते हैं। कभी गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के रूप में विचरण करते हुए श्री ननकाणा साहिब की पवित्रता बहाल करने के लिए घिनौने जब्र-ज़ुल्म का शिकार हो इतिहास के मैदान में गरजते रहे। ऐसे घृणित ज़ुल्म मानव-हृदयों को झकझोर कर रख देते हैं।

आप ही बताओ, स्वाभिमान से भरपूर कौमें ऐसे समय में क्या करें? कुछ योद्धा सरदार किशन सिंघ गड़गज्ज के चक्रवर्ती जत्थे का हिस्सा बन विचरण कर रहे हैं। कनाडा के सुख-आराम को त्यागकर, गदरी बाबाओं की संगत में प्रवान चढ़ रहे, नौजवान सरदार करम सिंघ दौलतपुर द्वारा दोआबा की धरती के गाँव दौलत पुर से 'बब्बर अकाली दोआबा' अखबार निकाल कर लोकचेतना का प्रवाह चलाया जा रहा है। यही पर्चा 'बब्बर अकाली दोआबा' था, जिसके नाम पर बाद में लहर का नाम ही 'बब्बर अकाली लहर' पड़ गया। बब्बर सरदार करम सिंघ के रूप में लट-लट जलती देश-भक्ति की इस शमां के गिर्द मर-मिटने वाले और परवाने भी आ जुड़ते गए। सरदार आसा सिंघ भकड्डुदी (किशनपुरा), सरदार बिशन सिंघ (मांगट), सरदार महिंदर सिंघ पंडोरी, सरदार गंगा सिंघ, सरदार उदै सिंघ रामगढ़ झुग्गियाँ, सरदार करम सिंघ माणोके, सरदार संता सिंघ छोटी हरिओं (लुधियाना), सरदार दलीप सिंघ धामियां, सरदार धरम सिंघ ह्यातपुर रुड़की, सरदार धंना सिंघ बहिलपुर, सरदार वरिआम सिंघ धुग्गा, सरदार रतन सिंघ रक्कड़ांबेट और सरदार उजागर सिंघ पनिआली के रूप में एक पूरी संस्था/ फौजी टुकड़ी बन जुड़ते गए। अनेक परवानों में से थे कुछ ये नाम।

चीफ़ खालसा दीवान की हुशियारपुर शैक्षणिक कान्फ्रेंस में लिया गया सख़्त स्टैंड ही था जो कि बाद में गाँव कौलगढ़ (बब्बर सरदार करम सिंघ का ननिहाल गाँव) की सीमा में

स्थित एक बाग़ में हुई बब्बरों की बैठक को गोरी हुकूमत के चाटुकारों को पार बुलाने का फ़ैसला करने के लिए मजबूर कर देता है। कौलगढ़ की इस ऐतिहासिक बैठक में तीन नौजवानों ने उभर कर सामने आते हुए हर घटनाक्रम की ज़िम्मेदारी अपने नाम ले लेने का फ़ैसला करवा लिया। ये तीन नौजवान थे— बब्बर सरदार करम सिंघ दौलतपुर, सरदार उदै सिंघ रामगढ़ झुग्गियाँ और सरदार धंना सिंघ बहिलपुर। लोक-हितों को अपनाए हुए इस लहर को आगे बढ़ाने के लिए ही इन योद्धाओं ने लोगों का खून चूसने वाली जोकों के पेट में से कुछ हिस्सा ज़बरदस्ती अपने लोगों की ख़ातिर निकालना शुरू कर दिया। वह घटना जाडला के मुंशी राम के घर की हो या कान्हे की फलाहियों के निकट पनाम (गढ़शंकर) में बछौड़ी के राम दित्ता 'काके लंबड़दार' से सरकारी खजाने में गढ़शंकर जमा करवाने के लिए जाते हुए मामला प्राप्त कर लेना हो। ये वे दिन थे जब गोरी हुकूमत का दोआबा की धरती से बोरिया-बिस्तर समेट, उसे दोआबा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के लाडलों, बाबा बंदा सिंघ बहादुर के वारिसों के अधीन हुआ प्रतीत होने लगा था।

१९२३ ई. के आरंभ में ही गोरी हुकूमत गदरी बाबाओं की मारी चोटों को अभी भूली नहीं थी, इन बब्बर योद्धाओं को संभालने के लिए अपनी पुलिस के अलावा २०० घुड़सवार और २५० पैदल फौजियों का प्रबंध, अकेले ज़िला जलंधर के लिए कर रखा था। दर्जनों लोक-विरोधियों को सोधना, सज़ा देनी बब्बर योद्धाओं का गौरवमयी इतिहास बनता जा रहा था।

बब्बर सरदार करम सिंघ दौलतपुर के नेतृत्व में बब्बरों के जत्थे ऐसे रूप में विचरण करते हैं कि सरकार हिल जाती है। हाकिमी झुंड इन बब्बर योद्धाओं का शिकार करने हेतु मारे-मारे घूम रहे हैं। लोक- विरोधी चाटुकारों की करतूतों के कारण बंबेली कांड घटित हो जाता है। जहाँ ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब चौंता साहिब के किनारे बेंयी की ओट लेकर गोरी हुकूमत के सैकड़ों सिपाहियों के साथ जूझते हुए चार बब्बर योद्धा शहीदी का जाम पी जाते हैं।

२७ फरवरी, १९२६ ई. को होली वाले दिन लहर के संस्थापक सरदार किशन सिंघ गड़गज्ज (वड़िंग), सरदार करम सिंघ माणोके, सरदार नंद सिंघ घड़ियाल, बाबू संता सिंघ छोटी हरिओं (लुधियाना), सरदार दलीप सिंघ धामियांकलाँ, सरदार धरम सिंघ ह्यातपुर (रुड़की) को लाहौर जेल में फांसी लगा दी गई, जिनके दर्शन को आज़ाद हवाओं में साँस लेने की चाह रखते लोग गुरुद्वारा डेरा साहिब पहुँचते हैं।

जैतो का ऐतिहासिक व लासानी मोर्चा

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सभी सिक्खों के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब और गुरुद्वारा साहिबान अपनी जान से भी अधिक प्यारे हैं। इनके मान-सम्मान, मर्यादा और पवित्रता की रक्षा हेतु ये लोग संघर्ष भी करते हैं तथा अपनी जान तक कुर्बान कर देते हैं। जिन-जिन दुष्टों व ज़ालिमों ने जब-जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा गुरुद्वारा साहिबान के मान-सम्मान को ठेस पहुंचाई है, इनकी मर्यादा एवं पवित्रता भंग की है, तब-तब सिक्खों ने उन्हें कड़ा सबक सिखाया है। सिक्ख प्रेम, सौहार्द्र, सद्भावना, भाईचारे में अटूट विश्वास रखते हैं और ये सभी धर्मों व समुदाओं का सम्मान करते हैं। इनकी श्रद्धा व आस्था के प्रकाश-स्तंभ श्री गुरु ग्रंथ साहिब और गुरुद्वारा साहिबान का कोई अपमान करे, वे यह कतई सहन नहीं करते।

सिक्ख पंथ के विद्वान व लेखक (दिवंगत) ज्ञानी भजन सिंघ लिखते हैं कि ''गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर और अकाली लहर के समय कई मोर्चे लगे, जिनमें सिक्ख समुदाय ने गुरुद्वारों की पवित्रता, सिक्ख-मर्यादा तथा स्वाभिमान की खातिर अनेक कुर्बानियां दीं। अकाली लहर के वक्त ही जैतो में गुरुद्वारा गंगसर साहिब का मोर्चा शुरू हुआ। इस मोर्चे में सैकड़ों सिंघ-सिंघनियां शहीद हुए और हज़ारों ने जेलों के कठोर व अकथनीय कष्ट सहन किए। गुरुद्वारा गंगसर साहिब में श्री अखंड पाठ साहिब करवाने हेतु गुरु के सिक्खों ने शहादत दी। इसके साथ ही देश की आज़ादी हेतु जारी संघर्ष को भी काफी सहायता मिली।''

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार नाभा रियासत के महाराजा रिपुदमन सिंघ ने गद्दी पर बैठते ही कुछ ऐसे अच्छे व सराहनीय कार्य किए, जिनके कारण सिक्ख कौम में उनका सम्मान व प्रभाव बढ़ गया। महाराजा ने गवर्नर जनरल की कौंसिल का सदस्य बनकर 'अनंद कारज बिल' (अनंद मैरिज एक्ट) पास करवाया और गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब के मोर्चे में सिक्ख कौम का साथ दिया। महाराजा रिपुदमन सिंघ की सिक्खों में बढ़ रही लोकप्रियता व प्रसिद्धि अंग्रेज़ सरकार को चुभने लगी। वह महाराजा को गद्दी पर से उतारने के लिए षड्यंत्र रचने लगी। उधर

*बी-एक्स-१२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०

महाराजा पटियाला भुपिंदर सिंघ और महाराजा रिपुदमन सिंघ के मध्य तकरार होने लगी। अंग्रेजों ने महाराजा पटियाला के माध्यम से महाराजा नाभा के विरुद्ध कई वाद दायर करवा दिए। अंतत: महाराजा नाभा को इतना विवश कर दिया कि वह गद्दी छोड़ दे।

९ जुलाई, सन् १९२३ (कुछ इतिहासकार तिथि ८ जून, १९२३ लिखते हैं) को महाराजा रिंपुदमन सिंघ को सिंहासन पर से उतारकर रियासत का प्रबंध एक अंग्रेज़ आफिसर को सौंप दिया गया। महाराजा नाभा को कैद कर पहले देहरादून रखा गया, फिर मद्रास प्रांत की एक जेल में भेज दिया गया। इस घटना के बाद सिक्खों में आक्रोश की ज्वाला भड़क उठी और वे संघर्ष करने हेतु जोश से भर उठे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को यह मामला अपने हाथों में लेना पड़ा। ९ सितंबर, १९२३ ई. को रोष दिवस (नाभा डे) मनाने का सिक्ख संगत ने निर्णय लिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा अकाली दल ने अपील की कि महाराजा नाभा के समर्थन में नंगे पांव जुलूस निकाले जाएं। इस विशाल कार्यक्रम की तैयारी के लिए कई स्थानों पर दीवान सजाए गए। इसी संबंध में २७ अगस्त, १९२३ ई. को जैतो में दीवान सजाया गया। पुलिस ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में से सरदार इंदर सिंघ मौड़ को गिरफ्तार कर लिया। इसके आक्रोश स्वरूप गुरुद्वारा गंगसर साहिब में निरंतर दीवान सजाने का निर्णय लिया गया। इस पर पुलिस ने कुछ और सिक्खों को गिरफ्तार कर लिया।

१३ सितंबर, १९२३ ई. को पुलिस ने गुरुद्वारा गंगसर साहिब पर कब्ज़ा कर लिया। उस समय वहां पर मौजूद एक सौ से अधिक सिंघों को गिरफ्तार किया गया। गुरुद्वारा साहिब में श्री अखंड पाठ साहिब जारी था। पुलिस पाठी सिंघ को घसीटकर बाहर ले गई और पाठ खंडित होने की अति दुखद घटना घटित हो गई। इसके बाद सिक्खों ने जैतो में पक्का मोर्चा लगाने की घोषणा कर दी। इस प्रकार अंग्रेज़ों और सिक्खों के दरमियान सीधे टकराव का माहौल बन गया।

अंग्रेज़ सरकार सत्ता के गुमान में सिक्ख समुदाय को दबाने अथवा कुचलने पर तुली हुई थी और गुरु के सिक्ख अपनी कुर्बानियों द्वारा अंग्रेज़ सरकार को झुकाने पर उतारू थे। बात तो महाराजा रिपुदमन सिंघ से नाभा रियासत की सत्ता छीनने एवं उन्हें कैद करने से शुरू हुई थी, परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ खंडित होने पर इस आंदोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सत्याग्रही जत्थे भेजने शुरू कर दिए।

१५ सितंबर, १९२३ ई. को पच्चीस सिंघों

का पहला जत्था भेजा गया। इसके बाद लगातार छ: माह तक २५-२५ सिंघों के जत्थे भेजे जाते रहे। अंग्रेज़ों के निर्देश पर पुलिस इन जत्थों में शामिल सिक्खों को पीटती तथा उन्हें गिरफ्तार कर यातनाएं देती। फिर दूर जंगलों में उन्हें छोड़ दिया जाता। इस मोर्चे के समय सिक्खों ने जिस भावना, कुर्बानी, सहिष्णुता, शांति का प्रकटावा किया, उसकी उदाहरण अन्य नहीं मिलती।

मोर्चे की अवधि लंबी होती देखकर पांच-पांच सिंघों के जत्थे भेजने का कार्यक्रम बनाया गया और ९ फरवरी, १९२४ ई. को पांच सौ सिंघों का प्रथम शहीदी जत्था श्री अकाल तख्त साहिब, श्री अमृतसर से रवाना हुआ। इस जत्थे के जत्थेदार सरदार ऊधम सिंघ नागोके नियुक्त किए गए। उन्हें रास्ते में गिरफ्तार कर लिया गया। यह शहीदी जत्था माझा व मालवा क्षेत्र में प्रचार करता हुआ २० फरवरी, १९२४ ई. को फरीदकोट रियासत के गांव बरगाड़ी पहुंच गया। यहां से दूसरे दिन २१ फरवरी को जत्था गुरुद्वारा गंगसर साहिब, जैतो की ओर चल पड़ा। हजारों लोग इस जत्थे के साथ-साथ चल पड़े।

उधर जैतो में पुलिस व सेना का भारी जमावड़ा था। जत्थे को रोकने के लिए तोपों एवं मशीनगनों की तैनाती भी की गई थी। जब पांच सौ सिंघों का यह शहीदी जत्था गुरुद्वारा गंगसर साहिब से एक फर्लांग की दूरी पर था, तब उन पर मशीनगनों द्वारा गोलियों की बौछार की जाने लगी। 'सतिनाम वाहिगुरु' का जाप करते हुए निडर व निर्भीक सिंघ आगे बढ़ते रहे। गोलियों की बौछार से एक भी सिंघ भयभीत न हुआ और किसी ने भी डरकर या घबराकर पीछे हटने की कोशिश न की। कई सिंघों के सीने छलनी-छलनी हो गए तथा उनके लहू से जमीन पर लामिसाल शहीदियों का इतिहास अंकित होने लगा। कई सिंघ गंभीर रूप से घायल हो गए।

जत्थे में जिंदा बचे सिंघों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। जत्थे के साथ चिकित्सक भी थे, परंतु पुलिस ने उन्हें किसी भी घायल का उपचार न करने दिया। पुलिस ने शहीद हुए सिंघों के शव भी संगत को उठाने न दिए। २१ फरवरी की दर्दनाक रात में ही बहुत-से शहीद सिंघों के शव एक विशेष रेलगाड़ी में लादकर दरिया सतलुज के तट पर ले जाए गए तथा बहते पानी में बहा दिए गए। २२ फरवरी को २२ शहीद सिंघों के शव अंतिम संस्कार हेतु सिक्ख समुदाय को सौंप दिए गए। सरकार ने झूठी घोषणा कर दी कि केवल २२ सिक्खों की जान गई है और ३३ घायल हुए हैं। लगभग ४५० सिक्खों को गिरफ्तार किया गया।

जब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने

जांच-पड़ताल की, तब पता चला कि वास्तव में एक सौ से अधिक सिंघ शहीद हुए हैं तथा घायल हुए सिंघों की संख्या लगभग २०० है।

गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब के मोर्चे से संबंधित सिंघ, जो कि जत्थों के संग आते हुए किसी आकस्मिक रोग या हादसे के कारण और जेलों में ज़ालिम सरकार के अत्याचारों के कारण शहीद हुए, उनकी गिनती लगभग १५० थी। अनेक गिरफ्तार सिंघों को नाभा के कारावास में रखा गया और जंबूरों से उनका मांस नोच-नोचकर उन्हें घोर यातनाएं दी गईं।

उल्लेखनीय है कि जैतो का यह मोर्चा दो वर्ष लगातार चलता रहा और पांच-पांच सौ सिंघों के जत्थे इस जाते रहे। पंडित जवाहर लाल नेहरू भी यह मोर्चा देखने कि लिए आए थे और उन्होंने सिक्खों के अहिंसक आंदोलन की प्रशंसा की थी। उनकी शांतमयी कुर्बानियों को नमन किया। फिरंगी हाकिमों ने नेहरू को भी हिरासत में ले लिया।

जैतो के मोर्चे के खूनी व शहीदी साके के बाद इस जुल्म को रोकने के लिए सारी सिक्ख कौम उठ खड़ी हुई। श्री अकाल तख्त साहिब, श्री अमृतसर से २८ फरवरी, १९२४ ई. को दूसरा जत्था रवाना हुआ और १४ मार्च को जैतो पहुंच गया। इस जत्थे पर पुलिस गोलियां चलाने का साहस न जुटा सकी। अंग्रेज सरकार यह देखकर घबरा उठी थी कि पहले जत्थे पर गोलियां बरसाने पर पांच सौ सिंघों में से एक भी सिंघ पीछे नहीं हटा था। यहां तक कि एक सिक्ख महिला की गोद में उठाया हुआ एक मासूम बालक भी गोली लगने से शहीद हो गया था। उस साहसी महिला ने अपने शहीद बालक की देह भूमि पर रख दी और स्वयं जत्थे के संग आगे चल पड़ी। कुछ कदम आगे जाने पर उसे भी गोली लगी और वह भी शहीद हो गई। धन्य था उसका साहस! उसकी कुर्बानी!! उसका जज़्बा!!! पुलिस ने दूसरे जत्थे को घेरकर गिरफ्तार कर लिया। तदुपरांत लगातार पांच-पांच सौ के १६ जत्थे आए और अंत में अंग्रेज़ सरकार को झुकना पड़ा। गुरुद्वारा साहिब पर से पुलिस का पहरा हटा लिया गया और सिंघों ने वहां पर पुन: श्री अखंड पाठ साहिब शुरू कर दिया। जैतो का मोर्चा फतह हुआ। इस महान व लासानी मोर्चे ने फिरंगी सरकार की प्रतिष्ठा पर गहरी चोट की।

भूले सिख गुरू समझाए

*-डॉ. परमजीत कौर**

गलतियां करना मनुष्य का स्वभाव है, लेकिन जब ये गलतियां आदत में शामिल हो जाती हैं, तब दुख का कारण बन जाती हैं तथा आत्मिक जीवन समाप्त होना शुरू हो जाता है। आज हम लोग अपने आप को गुरु का सिक्ख कहलवाने वाले *''लेखै कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार॥ बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार॥''* गुरु-वाक्य की आढ़ में की जा रही गलतियों को अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बना बैठे हैं तथा समाज में सम्मान खोते जा रहे हैं। संसार में निर्दया, मोह, लोभ तथा क्रोध की भयानक चार नदियां प्रवाहित हो रही हैं। माया-लिप्त मनमुख लोग दुरमति के कारण इन नदियों में तैरते हुए विकारों की मलिनता से मलिन हो जाते हैं। युवा हो या वृद्ध, मनमुख की तृष्णा, भूख कभी समाप्त नहीं होती :

किआ गभरू किआ बिरधि है
मनमुख त्रिसना भुख न जाइ॥ (पन्ना ६४९)

तृष्णा चाहे धन की हो, मान-प्रतिष्ठा या पदवी की हो, चाहे नश्वर शारीरिक सुंदरता की हो, रसों के आस्वादन की हो या भौतिक पदार्थों की हो, जब जरूरत से ज्यादा बढ़ जाती है, तो गलत जीवन-मार्ग पर ले जाती है। तब मनुष्य दाता प्रभु को भुला कर धोखा, कपट, झूठ की जिंदगी जीने लगता है। आज हम ज्यादातर सिक्ख इसी रोग से ग्रस्त हो गए हैं। प्राप्ति की अन्धी दौड़ में शामिल होकर तृष्णा के अधीन भक्ष्य-अभक्ष्य, योग्य-अयोग्य, सब जगह, प्रत्येक वस्तु पर हाथ डाल रहे हैं। प्राप्ति का नशा विवेक-शक्ति पर हावी हो गया है। पराया घर देखने की आदत ने आचरण को भ्रष्ट कर दिया है। दिखावा जिंदगी की मंजिल बनता जा रहा है। लोकाचार के लिए किये गये धर्म-कर्म जिंदगी के तनाव तथा मानसिक अशान्ति को दूर करने में समर्थ नहीं होते। गुरु-वचन हैं :

— *लालच झूठ बिकार मोह*
बिआपत मूड़े अंध॥
लागि परे दुरगंध सिउ नानक माइआ बंध॥
(पन्ना २५२)

— *दूजा भाउ करि पूजदे मनमुख अंध गवार॥*
(पन्ना १३४६)

माया-मोह में लिप्त अपने हित-अहित का विवेक न करता हुआ मन विषय-विकारों में

*६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)—१३५००१ फोन : ९८१२३-५८१८६

फंस गया है, जो हलाहल जहर की भांति धीरे-धीरे आत्मिक जीवन को समाप्त करते जा रहा हैं। माया-लिप्त मनमुख विषयों के जहर को अमृत समझ कर पी रहा है तथा नाम-अमृत को कड़वा समझ कर छोड़ रहा है :

जो हलाहल सो पीवै बउरा ॥
अंम्रितु नामु जानै करि कउरा ॥ (पन्ना १८०)

कुमार्ग पर जा रहे जीव को सावधान करते हुए गुरु साहिब समझा रहे हैं कि जिन कर्मों से तुझे परमात्मा की दरगह में शर्मिन्दा होना पड़ेगा, तू वही कर्म कर रहा है, जैसे गर्दभ मिट्टी में लोटने में ही सुख समझता है चाहे उसके शरीर पर चन्दन का लेप करते रहें। यही दशा तेरी है। आत्मिक जीवन देने वाले नाम-जल से तेरा प्रेम नहीं बनता तथा तू विषयों से प्रेम करता है :

जिह करणी होवहि सरमिंदा
इहा कमानी रीति ॥
संत की निंदा साकत की पूजा
ऐसी द्रिड़ी बिपरीति ॥१ ॥
माइआ मोह भूलो अवरै हीत ॥
हरिचंदउरी बन हर पात रे
इहै तुहारो बीत ॥१ ॥रहाउ ॥
चंदन लेप होत देह कउ
सुखु गरधभ भसम संगीति ॥
अंम्रित संगि नाहि रुच आवत
बिखै ठगउरी प्रीति ॥ (पन्ना ६७३)

कुछ गलतियां माया-मोह के कारण की जी रही हैं। अज्ञानता का अन्धकार गुरु साहिब द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलने से ही दूर हो सकता है। गुरु के उपदेश पर चलने से परमात्मा माया रूपी सर्पनी के जहर को अंदर से निकाल देता है :

माइआ भुइअंग ग्रसिओ है प्राणी
गुर बचनी बिसु हरि काढिबा ॥ (पन्ना ६९७)

गुरु पातशाह समझा रहे हैं कि भूले हुए गुरु के सिक्खों को गुरु ही शिक्षा देकर उचित जीवन-मार्ग की समझ प्रदान करता है, कुमार्ग पर जाते हुए को सन्मार्ग पर ले जाता है, इसलिए हे भाई! दिन-रात सतिगुरु द्वारा बताया मार्ग अपनाओ :

— सतिगुर बाझु न बेली कोई ॥
ऐथै ओथै राखा प्रभु सोई ॥
राम नामु देवै करि किरपा
इउ सललै सलल मिलाता हे ॥१२ ॥
भूले सिख गुरू समझाए ॥
उझड़ि जादे मारगि पाए ॥
तिसु गुर सेवि सदा दिनु राती
दुख भंजन संगि सखाता हे ॥ (पन्ना १०३१)
— मनमुख भूले पचि मुए उबरे गुर बीचारि ॥
(पन्ना ९३७)
— गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥
गुर की करणी काहे धावहु ॥
नानक गुरमति साचि समावहु ॥ (पन्ना ९३३)

गुरु के सिक्ख के लिए गुरबाणी ही गुरु है :

बाणी गुरू गुरू है बाणी
विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै
परतखि गुरू निसतारे ॥ (पन्ना ९८२)

क्षमा करना, गुरबाणी को गुरु मानने का भाव केवल गुरुद्वारे जाकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के समक्ष मस्तक झुका लेना या गुरबाणी का पाठ कर लेना, कथा-कीर्तन आदि सुन लेना तथा श्री अखंड पाठ साहिब करवा लेना ही नहीं है, गुरु-शब्द की विचार करना तथा गुरु साहिबान द्वारा निर्दिष्ट सिद्धांतों को, उपदेशों को जीवन में लागू करना ही गुरबाणी को गुरु मानना तथा गुरु के द्वारा बताए गए रास्ते पर चलना है। गुरमति का त्याग करने से जीवन गुरु-शबद रूपी दीपक से प्रकाशित होने के स्थान पर अज्ञानता के अंधकार में भटक जाता है। यहां यह विचारणीय है कि हम गुरु के सिक्ख भूल कर क्या रहे हैं तथा गुरु साहिबान ने हमारे लिए कैसा जीवन निर्दिष्ट किया है! परमात्मा पर पूर्ण विश्वास करना, दुख-सुख में मात्र परमात्मा का ही आश्रय लेना तथा अन्य द्वारों पर न भटकना गुरमति का महत्वपूर्ण सिद्धांत है। मनमुख बनावटी संतों तथा बनावटी गुरु के द्वारों पर भटकता हुआ मानसिक शान्ति गंवा लेता है। गुरमति में मढ़ी, मसाणी आदि की पूजा वर्जित है। गुरु-वाक्य है :

— सचा साहिबु एकु है
मतु मन भरमि भुलाहि ॥ (पन्ना ४२८)

— हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ फलु पाईऐ
दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी ॥
(पन्ना ४९०)

— दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ
मड़ै मसाणि न जाई ॥ (पन्ना ६३४)

गुरु साहिबान ने संतों की महिमा का बखान करते हुए बताया है कि संत-जन आत्मिक जीवन बनाने में सहायक होते हैं। साथ ही ऐसे संतों की जीवनचर्या बताते हुए समझाया है कि हे भाई! संत वो है जिसके हृदय में केवल हरि-सिमरन चलता रहता है। सदा आनंद रूपी परमात्मा का गुण-कीर्तन ही संतों की जिंदगी का आधार होता है। हे भाई! संत को मित्र तथा शत्रु दोनों एक जैसे लगते हैं, क्योंकि संत सब जीवों में प्रभु के बिना अन्य किसी को बसता नहीं समझता। परमात्मा का संत अन्य लोगों के करोड़ों ही पाप दूर करने की ताकत रखता है, किये वचनों को पूरा करता है, विकारों से प्रभावित नहीं होता। उसने माया को वश में किया होता है :

संत रहत सुनहु मेरे भाई ॥
उआ की महिमा कथनु न जाई ॥१ ॥ रहाउ ॥
वरतणि जा कै केवल नाम ॥
अनद रूप कीरतनु बिस्राम ॥

मित्र सत्र जा कै एक समानै ॥
प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै ॥ (पन्ना ३९२)

गुरु साहिबान द्वारा निर्दिष्ट जीवन-रहित से विहीन जन जीवन-सफर का उचित मार्ग नहीं सुझा सकते। नाम जपना, किरत करना तथा बांटकर खाना गुरमति के आधारभूत तत्व हैं, जिसे गुरु का सिक्ख भूल गया है। आज हमारी कमाई पर झूठ का रंग चढ़ता जा रहा है, आचरण भ्रष्ट हो गया है। गुरु का सिक्ख चाहे व्यापारी हो, दुकानदार हो, डॉक्टर हो, वकील या नौकरीपेशा हो, अपनी किरत-कमाई में सच्चा, पवित्र तथा छल-कपट, झूठ, पाखण्ड से रहित होना उसका धर्म है। गुरु साहिब ने गुरु के सिक्ख की जीवन-युक्ति निर्धारित करते समय मेहनत की कमाई कर उसमें से जरूरतमंदों की सहायता करने का आदेश दिया है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

पराया हक मारना पाप है :

— हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

— जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा
तिन किउ निरमलु चीतु ॥ (पन्ना १४०)

छल-कपट से रहित, निर्मल चित्त से नाम जपना गुरु के सिक्ख के जीवन का आधार है। नाम-सिमरन करने से प्रत्येक तरह का दुख, दरिद्रता, मन की अशांति नष्ट हो जाती है तथा आत्मिक आनन्द प्राप्त होता है :

दुख दारिद अपवित्रता नासहि नाम अधार ॥
(पन्ना २९७)

श्री गुरु रामदास जी गुरु के सिक्ख की नित्य की जीवनचर्या के बारे में विस्तार से समझाते हैं कि गुरु का सिक्ख अमृत वेला में उठकर हरि-नाम का सिमरन करता है, स्नान करके सतिगुरु के उपदेश द्वारा प्रभु के अमृतमयी नाम का जाप करता है। इस तरह उसका मन शान्त रहता है, विकारों की तरफ नहीं दौड़ता। फिर दिन चढ़ने पर सतिगुरु की बाणी का कीर्तन करता है तथा सारा दिन किरत-कार करते हुए प्रभु को याद रखता है :

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥
उदमु करे भलके परभाती
इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ॥
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै
सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै
बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि
सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥ (पन्ना ३०५)

गुरबाणी धुर की बाणी है, ब्रह्म विचार है। इसे सति-सति करके जानना तथा इसका

आदर करना प्रत्येक गुरसिक्ख का धर्म है। साधारण मनुष्यों द्वारा लिखे गए गीतों को गुरबाणी के साथ मिलाकर पढ़ना, गायन करना मनमुखता है। धुर की बाणी तथा साधारण जीवों द्वारा लिखित गीतों को एक बराबरी के दर्जे (स्तर) पर नहीं रखा जा सकता। इस तरह करने वाला निश्चित ही गुरबाणी के प्रति श्रद्धा-प्यार नहीं रखता।

गुरु साहिब ने गुरसिक्ख को सम्मानयोग्य, पवित्र, उच्च व्यक्तित्व का मालिक बनाया है, खण्डे-बाटे की पाहुल लेकर भी जात-पांत, वहम-भ्रम, छुआ-छूत, शगुन-अपशगुन, दिन-मुहूर्त, धागे-ताबीज, व्रत, श्राद्ध आदि विपरन की रीति के जाल से अपने आप को मुक्त करना है। भूले हुए गुरसिक्खों को गुरु साहिब समझा रहे हैं कि नाम जपने वाले के लिए सारे दिन सुहावने होते हैं :

— दिनु रैणि सभ सुहावणे पिआरे
जितु जपीऐ हरि नाउ ॥ (पन्ना ४३२)

— साहा गणहि न करहि बीचारु ॥
साहे ऊपरि एकंकारु ॥ (पन्ना ९०४)

— थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥
(पन्ना ८४३)

— सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि
जिसु चीति न आवै ॥ (पन्ना ४०१)

हिंदू मत के अनुसार मृत्यु के बाद पितर-लोक तक पहुंचने के लिए तीन सौ साठ दिन लगते हैं। इस दौरान मृतक के लिए दीपक, कपड़े, बर्तन, बिस्तर, चप्पल, फल आदि दिए जाते हैं। यह समझा जाता है कि ये सारी वस्तुयें मृतक तक पहुंचती हैं। प्रत्येक वर्ष श्राद्ध किया जाता है, जिसमें पितरों को तृप्त करने के लिए ब्राह्मणों को भोजन खिलाया जाता है, दान-पुण्य किया जाता है। भूले हुए सिक्ख भी थोड़े-बहुत अन्तर के साथ ये सब करते हैं। प्रत्येक वर्ष श्राद्ध भी किया जाता है। गुरु साहिब समझा रहे हैं कि यहां से किसी का भेजा हुआ कुछ भी आगे नहीं जाता। न ही किसी अन्य के द्वारा किए गए दान-पुण्य का फल मृतक प्राणी को मिलता है। आगे तो मनुष्य को उसका ही फल मिलता है जो वह स्वयं नाम की कमाई करता है, शुभ कर्म करता है। गुरु साहिब श्राद्ध आदि करने वाले पर करारी चोट करते हुए समझाते हैं कि यदि कोई पितर-लोक है तथा इस लोक में से कोई चोरी, ठगी आदि करके अर्जित किया गया धन अपने पितरों के लिए अर्पण करता है, यहां से अर्पण किया पितर-लोक तक पहुंचता है, तो परलोक में वह पदार्थ पहचाना जायेगा तथा पितर चोर बन जायेंगे :

जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥
अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥
वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥
नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥
(पन्ना ४७२)

— नानक ऐथै कमावै सो मिलै अगै पाए जाइ ॥

(पन्ना ५५६)

नशों का सेवन (शराब पीना) गुरसिक्ख के लिए वर्जित है। इसके सेवन से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, अपने-पराये की पहचान नहीं रहती, परमात्मा भूल जाता है तथा दरगाह में सजा मिलती है। ऐसा झूठा मद नहीं पीना चाहिये :

जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई
खसमहु धके खाइ ॥
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥

(पन्ना ५५४)

आधुनिक युग में शारीरिक शृंगार का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। उलटे-सीधे कपड़े पहनना, केशों का कत्ल करना बड़ी आयु में भी केशों तथा दाढ़ी को रंगना आज का रिवाज बन गया है। ऐसा शृंगार, जो कुदरती रूप-रंग को बिगाड़ कर किया जाता है, बाहरी तौर पर सुंदर बेशक बना देता हो, मगर आत्मा की सुन्दरता को नष्ट कर देता है। चंचलता को बढ़ाने वाले शृंगार विकारों को जन्म देते हैं, इसलिए गुरमति में ये वर्जित हैं। गुरसिक्ख को दया, धर्म, सत्य, संतोष का ही शृंगार करना चाहिये :

सतु संतोखु दइआ धरमु सीगारु बनावउ ॥
सफल सुहागणि नानका अपुने प्रभ भावउ ॥

(पन्ना ८१२)

आज के बदलते हालात में अपने मान-सम्मान, अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए यह जरूरी है कि दूसरों को दोष देने की आदत छोड़कर अपने न्यारेपन को प्रकट किया जाये! अपने आप को 'विपरन की रीति' के शिकंजे से मुक्त कर अपनी गौरवमयी विरासत के साथ जोड़ा जाये! गुरमति के अनुसार जीवन बनाकर ही अपने न्यारेपन को अपनी पहचान बना सकते हैं। गुरु साहिब बताते हैं कि जो गुरसिक्ख गुरु द्वारा बताये गये मार्ग पर चलता है, मैं उनके गुलामों का भी गुलाम हूं :

जो सिख गुर कार कमावहि
हउ गुलामु तिना का गोलीआ ॥

(पन्ना ३११)

जो गुरमति के अनुसार अपना जीवन नहीं बनाते, उन्हें घोर दुख सहने पड़ते हैं :

गुर ते मुहु फेरे जे कोई
गुर का कहिआ न चिति धरै ॥
करि आचार बहु संपउ संचै
जो किछु करै सु नरकि परै ॥ (पन्ना १३३४)

ख़बरनामा

भाई राजोआणा की रिहाई के लिए गृह मंत्री से जल्द मिलेगा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का शिष्ट-मंडल

श्री अमृतसर : १८ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट सरदार हरजिंदर सिंघ (धामी) की अध्यक्षता में हुई धर्म प्रचार कमेटी की मीटिंग में भाई बलवंत सिंघ राजोआणा सहित अन्य सिक्ख कैदियों की रिहाई के लिए भारत सरकार से माँग की गई। मीटिंग के बाद प्रेस के साथ बातचीत करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट सरदार हरजिंदर सिंघ ने कहा कि भारत सरकार ने श्री गुरु नानक देव जी के ५५० वर्षीय प्रकाश पर्व के अवसर पर सिक्ख कैदियों की रिहाई का एलान किया था, परंतु सरकार ने अपने इस फ़ैसले को आज तक लागू नहीं किया। उन्होंने विस्तारपूर्वक बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा भाई बलवंत सिंघ राजोआणा की सज़ा-माफी के लिए सितम्बर २०२० में सुप्रीम कोर्ट में अपील की गई थी, जिस पर सुनवाई के दौरान दिसंबर २०२० में सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को जल्द फ़ैसला लेने का हुक्म जारी किया था। सरकार द्वारा टालमटोल करने के कारण सुप्रीम कोर्ट द्वारा जनवरी २०२१ में दो सप्ताह का और समय दिया गया था, जबकि फरवरी २०२१ में सरकार ने छः सप्ताह और माँगे थे। उन्होंने कहा कि लगभग एक वर्ष का समय बीत जाने के बावजूद भी सरकार अभी तक फ़ैसला नहीं ले सकी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि इस सम्बन्ध में पहले भी गृह मंत्री को पत्र लिखे गए हैं और अब दोबारा उनके द्वारा पत्र लिख कर शिष्ट-मंडल के रूप में गृह मंत्री से मिलने के लिए समय माँगा गया है। उन्होंने कहा कि समय मिलने पर गृह मंत्री के साथ मुलाकात के समय भाई बलवंत सिंघ राजोआणा, प्रो. दविंदरपाल सिंघ सहित अन्य सिक्ख बंदियों की रिहाई के साथ-साथ अन्य सिक्ख मसलों पर भी बातचीत की जायेगी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने यह भी बताया कि पिछले दिनों प्रधानमंत्री श्री नरिंदर मोदी की तरफ से विश्वनाथ धाम कोरीडोर के उद्घाटन के समय जो पुस्तिका रिलीज की गई थी, उसमें सिक्ख इतिहास को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया है। इस पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा एतराज़ प्रकट किया गया था। उन्होंने बताया कि मिली जानकारी के अनुसार अब इस पुस्तिका में से कुछ हिस्से निकाल दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि इस मीटिंग में इस पुस्तिका को वापस लेने की माँग की गई है।

एडवोकेट सरदार हरजिंदर सिंघ ने पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब में संगत को दिए जाते प्रसाद के पैकिटों पर सिगरेट का इश्तिहार छापने की सख़्त शब्दों में निंदा की है। उन्होंने कहा कि इस घटना से सिक्ख श्रद्धालुओं के मन को भारी ठेस पहुँची है। उन्होंने पाकिस्तान सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान और पाकिस्तान सरकार से माँग की है कि ऐसी कोताही करने वाले लोगों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्यवाही की जाये। मीटिंग में धर्म

प्रचार लहर को और तेज़ करने के लिए भी विचार-चर्चा हुई और मीटिंग में धर्म प्रचार कमेटी के विभागीय कार्यों को नियमानुसार स्वीकृति प्रदान की गई। इस मीटिंग में धर्म प्रचार कमेटी के सदस्य साहिबान— भाई अजाइब सिंघ अभ्यासी, स. सुखवरश सिंघ, स. अवतार सिंघ वणवाला, स. मनजीत सिंघ बप्पीआणा, स. रामपाल सिंघ बहिणीवाल के अतिरिक्त कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य स. गुरिंदरपाल सिंघ गोरा, सचिव स. महिंदर सिंघ आहली, ओएसडी स. सतबीर सिंघ, अपर सचिव स. प्रताप सिंघ, स. सुखमिंदर सिंघ, उपसचिव स. सिमरजीत सिंघ व स. तजिंदर सिंघ पड्डा, सुप्रिंटेंडेंट स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल आदि उपस्थित थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा बुलाई पंथक सभा में पंथ-विरोधी ताकतों के ख़िलाफ़ एकजुटता का प्रकटावा

श्री अमृतसर : २० दिसंबर : सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में गत दिनों घटित दुर्भाग्यपूर्ण घटना को लेकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सिक्ख जत्थेबंदियों के नुमाइंदों के साथ एक पंथक सभा आयोजित की गई, जिस दौरान विभिन्न सिक्ख जत्थेबंदियों के प्रमुख व्यक्तियों ने अपने विचार प्रकट करते हुए घटित घटना की जहां सख़्त शब्दों में निंदा की, वहीं एकजुट होकर पंथ-विरोधियों को मात देने की वचनबद्धता भी प्रकट की। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट सरदार हरजिंदर सिंघ (धामी) के नेतृत्व में हुई इस पंथक सभा में सभी सिक्ख जत्थेबंदियों के प्रमुख लोगों ने एकमत होकर एलान किया कि पंथ-विरोधी शक्तियों का मुकाबला एकजुट होकर किया जायेगा। पंथक सभा की तरफ से महसूस किया गया कि अब सिक्ख पंथ के सब्र का प्याला भर चुका है, इसलिए सरकारों को समय रहते संभल जाना चाहिए। वक्ताओं ने कहा कि सचखंड श्री हरिमंदर साहिब की घटना ने सिक्ख कौम को गहरी मानसिक पीड़ा दी है। पंथ कभी बरदाश्त नहीं करेगा कि ऐसी घटनाएँ करने वालों को माफ किया जाये।

पंथक सभा के दौरान यह महसूस किया गया कि सरकारों की नाकामी के कारण बेअदबी करने वाले लोगों के हौसले बढ़ रहे हैं। सरकार द्वारा किसी भी दोषी को सख़्त सज़ा देने तक न लेकर जाने के कारण संगत का कानून और सरकारी तंत्र पर से विश्वास उठ चुका है, इसलिए सिक्ख पंथ खुद फ़ैसला लेने के लिए मजबूर हो रहा है। पंथक सभा के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान के अलावा शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल के प्रमुख बाबा बलबीर सिंघ, पंथ बाबा बिधी चंद दल के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, दमदमी टकसाल की तरफ से बाबा सुखदेव सिंघ, बाबा सेवा सिंघ खडूर साहिब, भाई जतिंदर सिंघ कैलिफोर्निया, बाबा गुरदिआल सिंघ टांडा, बाबा हरदेव सिंघ तलवंडी राईआं, बाबा अमीर सिंघ नानकसर संप्रदाय, बाबा जगजीत सिंघ लोपो वाले, बीबी किरनजोत कौर, महंत रविंदर दास ने संबोधित किया। वक्ताओं ने वचनबद्धता प्रकट की कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्ख पंथ

की सर्वोच्च संस्था है। जत्थेबंदियाँ इसका हर स्तर पर सहयोग करेंगी।

इस अवसर पर बेअदबी के चलन को लेकर कुछ प्रस्ताव भी पारित किये गए। ये प्रस्ताव शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, भाई राम सिंघ, भाई मनजीत सिंघ तथा स. भगवंत सिंघ सिआलका ने पढ़े और उपस्थित जनसमूह ने इन्हें जयकारों की गूँज में प्रवानगी दी। पारित किये गए प्रस्तावों में कहा गया कि बेअदबी की घटनाएँ योजनाबद्ध ढंग के साथ पंथ-विरोधियों द्वारा करवाई जा रही हैं। दुख की बात है कि बेअदबी करने वाले पकड़े गए दोषियों के पीछे काम करते मास्टरमाईंड अभी तक ढूँढे नहीं जा सके और किसी भी दोषी को मिसाली सज़ा नहीं दी गई। सरकारों के इस व्यवहार के कारण बेअदबी करने वाले लोगों के हौसले दिनो-दिन बढ़ रहे हैं। इस दौरान कहा गया कि पंजाब के माहौल को बिगाड़ने की साजिशों के लिए ज़मीन तैयार हो रही है, परन्तु सरकारें इसे हल्के में ले रही हैं। पंथक सभा ने पारित प्रस्ताव के माध्यम से अपील की कि हर सिक्ख पंथ-विरोधी ताकतों के मंसूबों को बेनकाब करने के लिए अपना फ़र्ज़ पहचाने। जहाँ बेअदबी की घटनाओ को अंजाम देने वाले अग्रसरों को सज़ा दिलानी ज़रूरी है, वहीं बेअदबी के साजिश-कर्त्ताओं तक पहुँचना इससे भी अधिक लाज़िमी है। पंथक सभा में पारित किये गए प्रस्तावों में पंथक-एकता और एकजुटता को मज़बूत करने का भी संकल्प लिया गया। इस दौरान श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार से अपील की गई कि ऐसी घटित घटनाओं के मद्देनज़र संगत को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किये जाएँ। इस अवसर पर बाबा नागर सिंघ तरना दल द्वारा पेश किये गए प्रस्ताव के आधार पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के साथ हर स्तर पर खड़े होने का एलान किया गया। कहा गया कि पंथ को दरपेश चुनौतियों के सम्मुख जो भी पंथक कार्यक्रम बनाया जायेगा, उसे सभी सिक्ख संप्रदायें एवं जत्थेबंदियाँ अमली जामा पहनाने के लिए अग्रसर रहेंगी।

पंथक सभा में शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल के प्रमुख बाबा बलबीर सिंघ ९६वें करोड़ी, बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, बाबा गज्जण सिंघ बाबा बकाला, बाबा सेवा सिंघ कारसेवा खडूर साहिब, बाबा सतनाम सिंघ कारसेवा श्री अनंदपुर साहिब, बाबा लक्खा सिंघ नानकसर वालों की तरफ से बाबा अवनीत सिंघ, बाबा जगजीत सिंघ लोपो वाले, बाबा इकबाल सिंघ अकालगढ़, बाबा हरी सिंघ तथा बाबा अवतार सिंघ कारसेवा भूरीवाले, बाबा जोगिंदर सिंघ कैलिफोर्निया, भाई कंवरचढ़त सिंघ प्रधान सिक्ख स्टूडेंट फेडरेशन, स. सरवन सिंघ सिक्ख स्टूडेंट फेडरेशन, गुरुद्वारा यादगार शहीदां अगवान के प्रमुख बाबा सुखविंदर सिंघ अगवान, भाई मधूपाल सिंघ मोगा शिरोमणि अकाली दल बीसी विंग, बाबा महिंदर सिंघ कारसेवा तरन तारन, दमदमी टकसाल से बाबा सुखदेव सिंघ, बाबा महावीर सिंघ ताजेवाल, बाबा सरदारा सिंघ गुरू का बाग़, बाबा घोला सिंघ की तरफ से बाबा चरनजीत सिंघ सरहाली वाले, स. हरजिंदर सिंघ मुख्य सलाहकार बीसी विंग शिरोमणि अकाली दल, बाबा सुक्खा सिंघ कारसेवा सरहाली, बाबा गुरदेव सिंघ भगतां दा डेरा श्री अमृतसर, बाबा प्रितपाल सिंघ

मिट्ठा टिवाणा, महंत रमिंदर दास, बाबा गुरदिआल सिंघ टांडा हुशियारपुर, बाबा जोगा सिंघ रामूखेड़ा हुशियारपुर, बाबा गुरप्रीत सिंघ हुशियारपुर, बाबा हरजिंदर सिंघ बलाचौर, बाबा तरलोक सिंघ तरना दल खिआला, बाबा गुरजीत सिंघ कारसेवा खडूर साहिब, बाबा सुबेग सिंघ डेरा कारसेवा गोइंदवाल साहिब, बाबा मेजर सिंघ तरना दल, बाबा नागर सिंघ हरीआं वेलां, बाबा मेजर सिंघ लुधियाना, बाबा रघबीर सिंघ खिआले वाले, बाबा हरदेव सिंघ तलवंडी कादियाँ, बाबा दविंदर सिंघ, बाबा गुरदित्त सिंघ, बाबा दलबीर सिंघ गुरू का बाग़, बाबा गुरबख़्श सिंघ निर्मल कुटिया तरन तारन, बाबा जोरा सिंघ बधनी कलाँ मोगा, बाबा अमीर सिंघ जवद्दी कलां, बाबा अमरीक सिंघ कारसेवा पटियाला, बाबा शिंदा सिंघ, बाबा सरबंस सिंघ जलालाबाद, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. महिंदर सिंघ आहली, स. सुखदेव सिंघ भूराकोहना, स. प्रताप सिंघ, स. बिजै सिंघ आदि उपस्थित थे।

पाकिस्तान में सरकारी अदारों में सिक्खों को श्रीसाहिब पहन कर जाने पर लगाए प्रतिबंध की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने की निंदा

श्री अमृतसर : २४ दिसंबर : पाकिस्तान के सूबा ख़ैबर पख्तूनखवा में सिक्खों के श्रीसाहिब (कृपाण) पहन कर सरकारी अदारों में जाने पर प्रतिबंध लगाने को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट सरदार हरजिंदर सिंघ (धामी) ने निंदनीय और धार्मिक आज़ादी के ख़िलाफ़ करार दिया है। उन्होंने कहा कि अमृतधारी सिक्खों के लिए पाँच ककारों में से श्री साहिब एक अहम ककार है, जो सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार लाज़िमी है। उन्होंने कहा कि दसम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा खालसा सृजना के समय प्रदत्त पाँच ककारी रहित में श्रीसाहिब को ज़रूरी करार दिया गया है, जो खालसाई रहन-सहन का अभिन्न अंग है। उन्होंने कहा कि कृपाण चाकू या ख़ंजर नहीं, बल्कि सिक्खों के लिए यह विश्वास का चिह्न है। पेशावर हाईकोर्ट के उक्त फ़ैसले से सिक्खों के मन में भारी आक्रोश है। उन्होंने कहा कि सिक्ख दुनिया भर में बसे हुए हैं और अब अलग-अलग देशों की सरकारों ने हवाई अड्डों सहित अन्य स्थानों पर भी सिक्खों को श्रीसाहिब पहनने की इजाजत दी हुई है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान सन् १९४७ से पहले भारत का अंग रहा है, इसलिए यहाँ निवास करने वाले सिक्ख अपने इतिहास और परंपराओं से अच्छी तरह से अवगत हैं। उन्होंने कहा कि सरकारों और अदालतों को सिक्ख कौम के जज़्बातों का सम्मान करना चाहिए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने जहाँ पाकिस्तान सरकार को इस मसले का तुरंत हल करने की अपील की, वहीं भारत सरकार को भी पाकिस्तान सरकार के साथ संबंध स्थापित कर इस मसले का समाधान करवाने के लिए कहा।

जैतो के मोर्चे के दौरान एक शहीदी जत्थे पर किए गए हमले का दृश्य

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

GURMAT GYAN February 2022

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

साका श्री ननकाणा साहिब का हृदयवेधक दृश्य

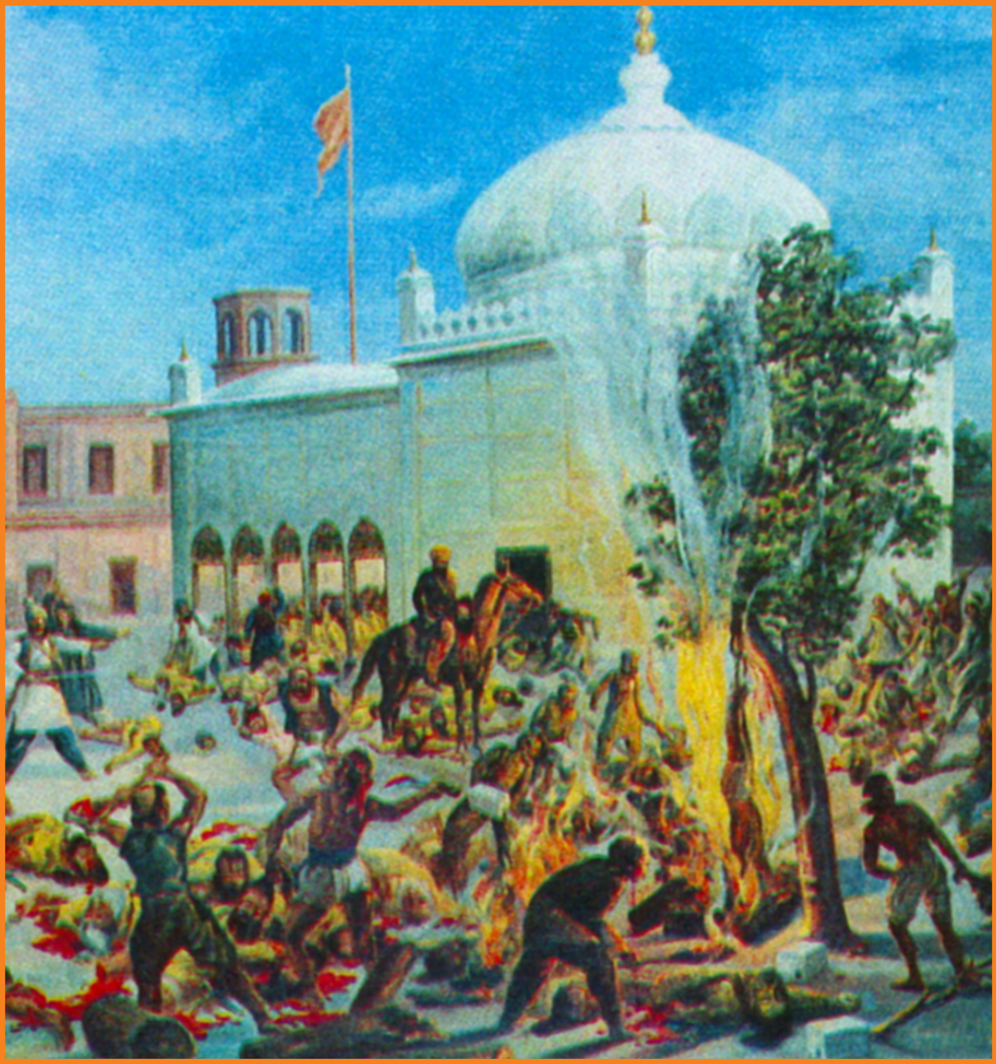

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh
Date: 7-2-2022